॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
May Almighty Illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path.

सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक पत्र

संस्कृति संचार

/JMCDSVV /DSVV TV

RNI - UTTBIL/2014/57984

देव संस्कृति विश्वविद्यालय | अश्वमेध महायज्ञ विशेषांक | फरवरी 2024 | त्रैमासिक समाचार पत्र | वर्ष 10, अंक 32, पृष्ठ 08

अश्वमेध महायज्ञ - राष्ट्र व विश्व कल्याण के लिए मेधा शक्तियों का आवाहन

भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में संपन्न हो रहा प्रथम एवं एकमात्र नशामुक्त संकल्प से प्रेरित अश्वमेध महायज्ञ

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

फरवरी 2024 में मुंबई अपने दरवाजे पर पहले कभी न देखे गए मिनी-कुंभ का अनुभव करने जा रहा है, जिसमें लाखों लोग गायत्री मंत्र का जाप करने और मंत्र-युक्त यज्ञ-अग्नि वेदी पर आहुति देने के लिए एक साथ आएंगे! अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा यह 47 वां अश्वमेध यज्ञ है, जिसका उद्देश्य इस हरित ग्रह के एकल परिवार के रूप में हमारी एकजुट पहचान को स्वीकार करते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को एकजुट करना है।

यज्ञ सूक्ष्म सकारात्मक ऊर्जा के द्वार खोलते हैं और आधुनिक शोधकर्ताओं द्वारा भी इसका अध्ययन और मान्यता दी जा रही है। पांच दिनों के भीतर 24 मिलियन या 2.4 करोड़ मंत्र-युक्त यज्ञ आहुतियों से युक्त एक अति-विशाल प्रयास से अभूतपूर्व सकारात्मकता उत्पन्न होने से देश और विशेष रूप से मुंबई शहर के लिए शांति और समृद्धि में परिलक्षित होगी।

अश्वमेध यज्ञ में अश्व का अर्थ शक्ति और गति है तथा मेधा बौद्धिक क्षमता के लिए है। इस प्रकार, अश्वमेध हमारी सामूहिक बुद्धि को बेहतर बनाने और मजबूत करने का एक विशिष्ट प्रयास है, ताकि हमें साथ-साथ विरासत में मिले पारिस्थितिकी तंत्र के साथ सद्भाव में अपनी उपलब्धि को अधिकतम करने के लिए ऊर्जा का उपयोग कर सकें। ये यज्ञ विशाल आयाम के होते हैं जिनमें लाखों लोग भाग लेते हैं और इस प्रक्रिया में प्रतिभागी हमारी शाश्वत, कालजयी (शाश्वत और सनातन) भारतीय संस्कृति और विरासत को भी समझते हैं।

अश्वमेध यज्ञ हजारों वर्ष पुराने हैं। इन अश्वमेध यज्ञों के महत्व के वर्णन से वेद, उपनिषद, दर्शन और पुराणों के पन्ने भरे पड़े हैं। प्राचीन काल में, इन्हें पारिस्थितिक संतुलन प्राप्त करने, ईश्वर की कृपा प्राप्त करने और राष्ट्र को एकजुट करने के लिए किया जाता था। युगऋषि ने गायत्री परिवार की कल्पना गायत्री मंत्र और यज्ञ की सार्वभौमिक महिमा और चमक तथा सहस्राब्दियों से हमारी अद्वितीय भारतीय पहचान बनाने में निभाई गई भूमिका पर की थी। एकजुट राष्ट्रीयता और वैश्विक सद्भाव की इस भावना को मजबूत करने और बढ़ावा देने के लिए, गायत्री परिवार पिछले ३१ वर्षों से अश्वमेध यज्ञ का आयोजन कर रहा है।

प्राचीन काल में साधारण यज्ञ आंतरिक परिष्कार एवं आत्मशुद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। महायज्ञ सामाजिक जीवन को शुद्ध करने के लिए किये जाते थे। परन्तु जब राष्ट्र और पर्यावरण के सम्पूर्ण नवनिर्माण की आवश्यकता महसूस हुई तो विश्व स्तर पर अश्वमेघ यज्ञ की परम्परा उत्पन्न हुई।

इस प्रकार, यज्ञों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है; अर्थात यज्ञ, महायज्ञ और अश्वमेध यज्ञ। उनके परिणामों का परिमाण भी उसी क्रम में बढ़ता जाता है। इतने बड़े पैमाने के अश्वमेध यज्ञ का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य जन-जन की सुप्त प्रतिभा को जागृत करना भी है। यह मनुष्य की अंतर्निहित बुद्धि ही है जो उसे अन्य जीवित प्राणियों से अलग बनाती है। इसके आधार पर ही उन्होंने एक वैज्ञानिक के रूप में प्रकृति के रहस्यों का पता लगाया है और समस्त प्राणियों के भाग्य का नियंता होने का दावा कर रहे हैं। यह मानव प्रतिभा - मेधा द्वारा किया गया चमत्कार है जिसने समाज और उसके शासन के तरीकों का निर्माण किया, और इस पृथ्वी को संस्कृति और सभ्यता की एक ऐसी सुंदर और अच्छी तरह से विकसित संरचना में बदल दिया।

आज के वैज्ञानिक स्वभाव के संदर्भ में, यज्ञों और मंत्रों का विभिन्न वैज्ञानिक मापदंडों के माध्यम से शोध अध्ययन किया जा रहा है और पारिस्थितिकी, पर्यावरण के साथ-साथ मानव मनोविज्ञान पर उनके प्रभाव पर नए आशाजनक दृष्टिकोण और संकेत सामने आ रहे हैं। आज, अश्वमेध यज्ञ करने के 31 वर्षों के बाद, यह साबित करने के लिए पर्याप्त अनुभवजन्य तथ्य है कि जहां भी अश्वमेध यज्ञ किए गए हैं, उन क्षेत्रों में अपराधों और आक्रामकता की दर में कमी देखी गई है।

"प्रजापतिरकामयत। सर्वान्कामानाप्नुया ११
सर्वाव्यष्टीर्व्यश्नुवीयेति सऽएतमश्वमेधं त्रिरात्रं
यज्ञक्रतुमपश्यत्तमाहरत्तेनायजत तेनेष्ट्वा सर्वान्कामानाप्नोत्सर्वा
व्यष्टीत्श्नुत सर्वान्ह वै कामानाप्नोति सर्वाव्यष्टीर्व्यश्नुते योऽश्वमेधेन
यजते।"-शत. १३/४/१/१

प्रजापति ने इच्छा की कि मेरी सभी कामनायें पूरी हो जायें, मुझे सभी पदार्थ मिलें। उसने इस त्रिरात्र (तीन रात वाले) यज्ञक्रतु, अश्वमेध को देखा। उसको ले आया। उससे यज्ञ किया। इस यज्ञ को करके सब कामनाओं को पूरा किया। सब पदार्थों को प्राप्त किया। जो अश्वमेध यज्ञ करता है, उसकी सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। वह सभी पदार्थों को प्राप्त कर लेता है। (अखण्ड ज्योति, नवम्बर 1992)

आधुनिक युग में देवभूमि भारत की पुण्य धरा पर अवतरित गायत्री के सिद्ध साधक इस युग के विश्वामित्र, अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक और मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के सूत्रधार व 21 वीं सदी उज्जवल भविष्य के उद्घोषक परम पूज्य गुरुदेव युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी व वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा ने भारत को सशक्त व समृद्ध बनाने व विश्व कल्याण की मंगल भावना से दैवीय सत्ता के निर्देश पर अश्वमेध गायत्री महायज्ञों की अभिनव व पावन श्रृंखला का सूत्रपात किया व भारत के साथ विश्व के अन्य देशों में भी अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए। देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के उसी क्रम में इन दिनों परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य संरक्षण में अश्वमेधिक महायज्ञों की श्रृंखला फिर से चल पड़ी है और अश्वमेधिक यज्ञों की पावन श्रृंखला का 47 वां अश्वमेध यज्ञ अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वाधान में 21 से 25 फरवरी के मध्य महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई में सम्पन्न हो रहा है। भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई में आयोजित होने वाला यह अश्वमेध अपने आप में अनुपम अद्वितीय है जो पूरे विश्व वसुन्धरा तक भारतीय संस्कृति का शंखनाद करने में सक्षम होगा।

मुंबई अश्वमेध की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं और हम लोगों को इस भव्य प्रयास से अवगत कराना चाहते हैं और उन्हें हमारी सांस्कृतिक विरासत के इस उत्सव का हिस्सा बनने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं।

मुंबई अश्वमेध गायत्री महायज्ञ भूमिपूजन

● पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज के तत्वावधान में मायानगरी मुंबई में 21 से 25 फरवरी 2024 की तिथियों में अश्वमेध गायत्री महायज्ञ होगा। इस महायज्ञ हेतु शांतिकुंज से अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने आनलाइन जुड़कर भूमिपूजन समारोह को संबोधित किया। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा के कुशल संचालन में वर्ष 1992 में जयपुर से प्रारंभ हुआ आश्वमेधिक अनुष्ठान का यह 47 वां महायज्ञ है।

इस महायज्ञ से जन मानस को आध्यात्मिक आहार मिलेगा। भारतीय संस्कृति के मानदण्डों के अनुरूप अश्वमेध गायत्री महायज्ञ की सभी गतिविधियाँ संचालित होंगी। अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि मुंबईवासियों के घर-घर यज्ञ पिता-गायत्री माता के संदेशों को हमारे परिजन पहुंचायेंगे। मुंबई जाग गया, तो हमारी भारतीय संस्कृति को जगाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

भूमिपूजन समारोह के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि गायत्री परिवार से मेरा पुराना रिश्ता है। मैंने गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा का स्नेह व आशीर्वाद पाया है। गायत्री परिवार समाज व राष्ट्र के उत्थान में निःस्वार्थ भाव से जुटे हुए संगठन का नाम है। राज्यपाल बैस ने मुंबई में होने वाले अश्वमेध महायज्ञ की सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएँ दी। वन व सांस्कृतिक मंत्री (महाराष्ट्र शासन) सुधीर मुनगंटीवार ने कहा कि परिवार निर्माण, समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण में गायत्री परिवार का योगदान अतुलनीय है।

इससे पूर्व शांतिकुंज के युवा प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा राजसूय यज्ञ राज्य को विकसित करने के लिए, पुत्रेष्टि यज्ञ पुत्र प्राप्ति हेतु तथा अश्वमेध महायज्ञ राष्ट्र की चहुंमुखी विकास के लिए होता है। गायत्री परिवार का मुख्य उद्देश्य-राष्ट्र के विकास के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति के उत्थान का है।

अश्वमेध गायत्री महायज्ञ के संयोजक मनुभाई ने बताया कि विशेष गणमान्य दम्पतियों ने वैदिक रीति से भूमिपूजन किया। यह महायज्ञ नवी मुंबई के खारघर सेक्टर-28 स्थित सेंट्रल पार्क ग्राउण्ड में फरवरी 2024 में होगा। इस अवसर पर हिरानंदानी ग्रुप के अध्यक्ष निरंजन हिरानंदानी, सोलर ग्रुप के अध्यक्ष सत्यनारायण नुवाल, रिलाइंस ग्रुप की राधिका मर्चेंट सहित महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों से आये हजारों परिजन उपस्थित रहे।

विशिष्ट गणमान्यों को अश्वमेध महायज्ञ का निमंत्रण देने पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिड़ला जी, रक्षामंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह जी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा जी, केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री माननीय डॉ. वीरेंद्र कुमार जी तथा केंद्रीय मंत्री माननीय श्री गिरिराज सिंह जी को अश्वमेध महायज्ञ, मुम्बई में आमंत्रित करते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 2 दिसम्बर को भारत सरकार के मंत्रियों एवं गणमान्यों को अश्वमेध महायज्ञ, मुम्बई में आमंत्रित करने दिल्ली पहुँचे थे।

लोस. अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला एवं भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी को अश्वमेध महायज्ञ, में आमंत्रित करते हुए डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

इस प्रवास में उन्होंने माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी से, केंद्रीय रक्षा मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह जी से, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जे.पी. नड्डा जी से, केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री माननीय डॉ. वीरेंद्र कुमार जी से, केंद्रीय मंत्री माननीय श्री गिरिराज सिंह जी से तथा श्री मुक्तेश के. परदेशी जी (सचिव-कांसुलर, पासपोर्ट, वीजा और प्रवासी भारतीय मामले) से मुलाकात की। उन्हें मुम्बई में 21 से 25 फरवरी 2024 की तिथियों में होने जा रहे अश्वमेध महायज्ञ में भागीदारी का आमंत्रण दिया।

माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सभी महानुभावों को अश्वमेध महायज्ञ के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक महत्त्व से अवगत कराया। माननीय श्री राजनाथ सिंह जी ने वैश्विक पटल पर गायत्री परिवार द्वारा संचालित विभिन्न अभियानों की प्रशंसा की। वे सन् 1988 में शान्तिकुञ्ज में आयोजित हुए नैतिक शिक्षा शिविर में सम्मिलित होने के अनुभवों को साझा करते हुए गद्गद हुए। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने माननीय श्री जेपी नड्डा जी को उनके जन्मदिवस पर अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से शुभकामनाएँ दीं एवं उन्हें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में रुद्राक्ष का पौधा एवं परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

माननीय डॉ. वीरेंद्र कुमार जी के साथ व्यसन मुक्ति के विभिन्न अभियानों पर विशेष रूप से चर्चा हुई। अश्वमेध यज्ञ का आयोजन नशा मुक्त विश्व के विशेष संकल्पों के साथ इसका आयोजन हो रहा है। डॉ. पण्ड्या ने उन्हें शान्तिकुञ्ज आने का आमंत्रण भी दिया।

नारी सशक्तिकरण का अनोखा उदाहरण हैं गायत्री परिवार की महिलाएं

यज्ञ को जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका का निर्वहन कर रहीं महिला मण्डल की टोलियां

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

नारी केवल तुम श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में ॥

21वीं सदी में नारी को शक्ति स्वरूपा माना गया है, पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी कहते हैं, 21वीं सदी नारी सदी। नारी का सम्मान जहां है संस्कृति का उत्थान वहां है। नारी ही गरिमा है, नारी ही प्रेम की मूर्ति है। वर्तमान में नारी हर क्षेत्र में पुरुष से किसी भी रूप में कम नहीं है, चाहें कर्मकांड की बात कर लें यज्ञ-धर्म की बात कर लें हर क्षेत्र में नारियों का स्थान अद्वितीय है।

वर्ष 1971, शांतिकुंज में महाकाल का एक नया सन्देश लेकर उतरा। नारी शक्ति का युग शक्ति के रूप में उदय। यूँ शांतिकुंज ने अपनी स्थापना के प्रथम दिवस से ही वन्दनीय माताजी को अपनी अधिष्ठात्रि शक्ति के रूप में अपना करके नारी के गौरव का उद्घोष कर दिया था। प्राचीन समय में नारियों को इतने अधिकार प्राप्त नहीं थे कि वह मंदिर में प्रवेश करें पूजा पाठ करें कर्मकांड इत्यादि में लिप्त रहे किंतु जैसे-जैसे समय परिवर्तित हुआ नारियों के अंदर भी दुर्गा काली आदि शक्तियों के स्वरूप का उद्भव भी होने लगा। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने मनुष्यों में आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण पर भी जोर दिया और एक ऐसी परिपाटी प्रारंभ की जिससे महिलाओं को यज्ञ कराने का अधिकार प्राप्त हुआ और गायत्री तीर्थ शांतिकुंज एक मात्र ऐसा स्थान बना जहां 51 वर्षों से महिलाएं दैनिक यज्ञ संचालन कराती आ रही हैं।

यज्ञ को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ यज्ञ कर्मकाण्ड कराती महिला मण्डल की कार्यकर्त्ता

माता भगवती देवी शर्मा के सानिध्य में रह कर लाखों महिलाओं ने यज्ञ संचालन, संस्कार, महिला और युवा प्रशिक्षण कराने की शिक्षा प्राप्त की। जिससे उन्हें सामाजिक स्तर पर अपनी एक पहचान मिली और वे इतनी सक्षम बनी के आज हजारों लोगों को प्रशिक्षित कर रही हैं। यह कथन बिल्कुल सत्य है कि नारी पूरे समाज की दशा और दिशा बदल सकती है, इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण है शांतिकुंज में 1971 से चलता आ रहा दैनिक यज्ञ। सर्दी, गर्मी या बरसात कोई भी मौसम हो, न यह यज्ञ रुकता हैं और न ही इसे संचालित करने वाली महिलाएं। शांतिकुंज में कार्यकर्ता के रूप में रह रही सभी महिलाएं क्रमशः नित्य प्रतिदिन यज्ञ करवाती हैं, जिसमें दो महिलाएं एक साथ मंच से यज्ञ संचालित करती हैं। साथ ही ये सभी महिलाएं नौ दिवसीय और युगशिल्पी शिविर की कक्षाएं भी लेती हैं।

1975 में नारी अभ्युदय के सन्दर्भ में किए गए प्रयासों का अधिक सशक्त और सुनियोजित स्वरूप प्रकट हुआ। 8 मार्च, 1975 जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मानने का निर्णय लिया था। यद्यपि इस निर्णय के काफी पूर्व पू. गुरुदेव महिला जागरण अभियान सम्बन्धी अपना कार्यक्रम 1926 से निश्चित कर चुके थे। उनके द्वारा किया गया यह निश्चय कुछ ऐसा था मानो भगवान महाकाल शांतिकुंज को अपने संकल्पों का केन्द्र बनाकर उनका विश्वव्यापी विस्तार कर रहे हों। वर्ष 1971 शांतिकुंज के स्थापना से ही प्रत्येक दिन महिलाओं द्वारा यज्ञ कर्म संपन्न किया जा रहा है।

गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने 21वीं सदी को नारी सदी कहा था और इसका उदाहरण हम शांतिकुंज में देख ही सकते हैं। परंतु ये क्रम यहीं नहीं रुका अब महिला टोली देश के कोने-कोने में जाकर वहाँ हो रहे बड़े बड़े यज्ञ को संचालित करती हैं। पिछले वर्ष ही महिला सशक्तिकरण वर्ष के अंतर्गत शांतिकुंज से सात महिला टोली देश के विभिन्न राज्यों में महिला प्रशिक्षण शिविर के लिए रवाना हुई थी। गायत्री परिवार के द्वारा चलाए जा रहे गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान में भी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका देखी जा सकती है, जिसमें सभी प्रशिक्षित महिलाएं घर-घर जाकर यज्ञ करा रही हैं। 5 मई, 2023 को गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ के अन्तर्गत 24 लाख घरों में एक साथ, एक दिन तथा एक समय पर यज्ञ सम्पन्न किये गये।

महादेवी वर्मा ने नारी की महानता के बारे में लिखा है- नारी केवल माँस पिण्ड की संज्ञा नहीं है आदिम काल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर उसकी यात्रा को सफल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भर कर मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी धरा पर स्वर्गीय ज्योति की साकार प्रतिमा है। उसकी वाणी जीवन के लिए अमृत स्रोत है। उसके नेत्रों में करुणा, सरलता और आनन्द के दर्शन होते हैं। उसके हास्य में संसार की समस्त निराशा और कड़वाहट मिटाने की अपूर्व क्षमता है। नारी सन्तप्त हृदय के लिए शीतल छाया है। वह स्नेह और सौजन्य की साकार देवी है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के शब्दों में नारी पुरुष की शक्ति के लिए जीवन सुधा है। त्याग उसका स्वभाव है, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः।

जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। क्योंकि समाज में नारी को समान पूज्य स्थान देकर जब उसे पुरुष का सहयोगी, सहायक बना लिया जाता है तो ही समृद्धि, यश, वैभव बढ़ते हैं, जिससे सुख, शाँति, आनन्दपूर्ण जीवन बिताया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि नारी का सहयोग मानव जीवन में उन्नति, प्रगति, विकास के लिए आवश्यक है, अनिवार्य है। वह समाज उन्नति नहीं कर सकता, जहाँ स्त्री जो मानव जीवन का अर्द्धांग ही नहीं एक बहुत बड़ी शक्ति है, को सामाजिक अधिकारों से वंचित कर उसे लुंज-पुंज एवं पद-दलिता बना कर रखा जाता है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम नारी को समाज से वही प्रतिष्ठा दें, जिसकी आज्ञा हमारे ऋषि-मनीषियों ने दी है। उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ायें। हम देखेंगे कि नारी अबला, असहाय न रहकर शक्ति सामर्थ्य की मूर्ति बनेगी। वह जीवन यात्रा में हमारे लिए बोझा न रहकर हमारी सहायक, सहयोगिनी सिद्ध होगी। तब हमें उसके भविष्य के संबंध में चिन्तित न होना पड़ेगा। वह अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ होगी। अपना निर्वाह करने में समर्थ होगी। हमारे सामाजिक जीवन की यह एक बहुत महत्वपूर्ण माँग है कि सदियों से घर बाहर दीवारों में गंदे पर्दे, बुर्के की ओट में छिपी हुई पराश्रिता, परावलम्बी, अशिक्षित, अन्धविश्वास ग्रस्त, संकीर्ण स्वभाव नारी को वर्तमान दुर्दशा से उभारें। उसे समानता, स्वतंत्रता की मानवोचित सुविधा प्रदान करें। उसे शिक्षित, स्वावलम्बी, सुसंस्कृत एवं योग्य बनावें। तभी वह हमारे विकास में सहायक बन सकेगी। वर्तमान समय के परिवेश में राष्ट्र के विकास कार्यों में अग्रणी भूमिका में नारियां अपना योगदान दे रहीं हैं। देश के सैन्य क्षेत्र में भी अब चयनित होकर जल, थल, नभ में सुरक्षा प्रहरी बनकर देश की रक्षा का रहीं हैं।

मानव के अंदर भगवान को देखने की क्षमता है - डॉ. चिन्मय जी

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

उत्तर प्रदेश गायत्री शक्तिपीठ बासुडीहा कोठा द्वारा दिनांक 22 से 26 नवम्बर 2023 की तिथियों में 108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया। इस महायज्ञ में 25,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। पाँच दिवसीय यज्ञ में उन्हें हर पल जीवन को उत्कृष्ट बनाने तथा लोकमंगल के लिए समर्पित होने की प्रेरणा मिलती रही।

कार्यक्रम का सर्वाधिक उत्साहवर्धक पल दीप महायज्ञ का था, जब देसंविवि, के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने उद्गारों से सभी को भावविभोर कर दिया। 11,000 प्रज्वलित दीपों की साक्षी में उन्होंने आत्मजागृति के लिए प्रेरित करने वाला अत्यंत उत्साहवर्धक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मानव के अंदर भगवान को देखने की क्षमता है। भगवान मंदिर में नहीं, लोगों के मन में बसते हैं। उन्होंने कहा कि नियमित साधना से आत्मशक्ति का जागरण होता है और श्रेष्ठ साहित्य के स्वाध्याय से वैचारिक शक्ति बढ़ती है। इनसे भगवान के दर्शन की सामर्थ्य बढ़ती जाती है। व्यक्ति की श्रद्धा ऐसी होनी चाहिए जो विश्वास जगा दे कि भगवान कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हमारे साथ है।

अगले दिन प्रातः आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने युवाओं से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि इन दिनों सांस्कृतिक परिवर्तन की नई गाथा लिखी जा रही है। भारत के स्वाभिमान, संस्कृति का नए सिरे से जागरण होना है। राष्ट्र का उत्थान युवाशक्ति ही करेगी।

कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची सर्वश्री श्याम बिहारी दुबे, नरेन्द्र सिंह ठाकुर, ओइंद्र सिंह, रामावतार पाटीदार, आलोक सिंह, डॉ. प्रभुनाथ सोनकर, देसंविवि, के डॉ. ऋतुध्वज सिंह, श्याम यादव, सोमेश्वर तांडी, रूद्र गिरी की टोली ने किया।

उत्तर प्रदेश गायत्री शक्तिपीठ बासुडीहा कोठा, गोरखपुर में 108 कुण्डीय यज्ञ को सम्बोधित करते डॉ. चिन्मय जी एवं आयोजन में उपस्थित विशाल जनसमूह

उपजोन समन्वयक श्री प्रभाशंकर दुबे, जिला समन्वयक श्री अशोक तिवारी सहित प्रायः सभी प्राणवान कार्यकर्त्ताओं से आद. डॉ. चिन्मय जी ने कुशल क्षेम जानी, उत्साहवर्धन किया। सुप्रसिद्ध गोरखनाथ मठ के योगी सोमनाथ जी से भेंट हुई। गोरखपुर, देवरिया के समस्त कार्यक्रमों के संयोजन में श्री संजय चतुर्वेदी जी का विशिष्ट योगदान रहा।

● सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा निर्माण के लिए भूमि पूजन

दीपयज्ञ से पूर्व 25 नवंबर, 2023 को आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के बासुडीहा में पहुँचने पर गोरखपुर जिले के परिजनों ने उनका भव्य स्वागत किया। डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री शक्तिपीठ पहुँचकर सप्तऋषि मंडल मंदिर एवं माता-पिता मंदिर का अनावरण किया।

●कई गाँवों से गुजरी कलश यात्रा

प्रथम दिन शक्तिपीठ से 2100 कलशों की भव्य शोभायात्रा निकली। यात्रा में शामिल बहिनों ने बासुडीहा, गंभीरपुर, मसानपाकड़, कोठा आदि दर्जनों गाँवों का भ्रमण करते हुए 12 किलोमीटर की पदयात्रा की।

● विशाल पुस्तक मेला

आयोजकों ने विशाल पुस्तक मेले का आयोजन किया था, जिसमें जीवन की हर समस्या का समाधान परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य के रूप में उपलब्ध कराया गया था।

डॉ. चिन्मय जी ने इस पुस्तक मेले का अवलोकन करते हुए ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

मुंबई अश्वमेध महायज्ञ

जयपुर से हैदराबाद तक की 46 अश्वमेधों की दिग्विजय यात्रा

अश्वमेध यज्ञ शृंखला
(राष्ट्र को समर्थ एवं सशक्त बनाने हेतु)

क्र.	स्थान	प्रदेश/देश	दिनांक
01	जयपुर	राजस्थान	07-11-1992
02	भिलाई	छत्तीसगढ़	18-02-1993
03	गुना	मध्यप्रदेश	03-04-1993
04	भुवनेश्वर	ओडिशा	03-05-1993
05	लिस्टर	इंग्लैण्ड	08-07-1993
06	टोरेण्टो	कनाडा	23-07-1993
07	लॉस एंजिल्स	यूएसए	09-08-1993
08	लखनऊ	उत्तरप्रदेश	27-10-1993
09	वड़ोदरा	गुजरात	26-11-1993
10	भोपाल	मध्यप्रदेश	11-12-1993
11	नागपुर	महाराष्ट्र	06-01-1994
12	ब्रह्मपुर	ओडिशा	26-01-1994
13	कोरबा	छत्तीसगढ़	06-02-1994
14	पटना	बिहार	23-02-1994
15	कुरुक्षेत्र	हरियाणा	31-03-1994
16	चित्रकूट	मध्यप्रदेश	16-04-1994
17	भिण्ड	मध्यप्रदेश	02-05-1994
18	शिमला	हिमांचल प्रदेश	22-06-1994
19	बुलन्दशहर	उत्तरप्रदेश	17-11-1994
20	हल्दीघाटी	राजस्थान	29-11-1994
21	राजकोट	गुजरात	13-12-1994
22	जबलपुर	मध्यप्रदेश	28-01-1995
23	कोटा	राजस्थान	12-02-1995
24	गोरखपुर	उत्तरप्रदेश	25-02-1998
25	इन्दौर	मध्यप्रदेश	05-04-1995
26	शिकागो	यूएसए	28-07-1995
27	ऑवलखेड़ा	उत्तरप्रदेश	03-11-1995
28	मॉण्ट्रियल	कनाडा	26-07-1996
29	न्यूजर्सी	यूएसए	24-07-1998
30	हरिद्वार	उत्तराखण्ड	06-11-2000
31	तिरुपती	आन्ध्रप्रदेश	23-12-2001
32	सिडनी	आस्ट्रेलिया	01-10-2005
33	मदुरै	तमिलनाडु	29-12-2005
34	नरेन्द्रपुर	पं. बंगाल	09-01-2006
35	जोहन्सवर्ग	दक्षिण अफ्रीका	03-05-2006
36	लुधियाना	पंजाब	05-10-2007
37	काशीपुर	उत्तराखण्ड	13-11-2008
38	सम्बलपुर	ओडिशा	30-12-2008
39	ऑकलेण्ड	नॉर्थ आइसलैण्ड	27-02-2009
40	हरिद्वार	उत्तराखण्ड	07-11-2011
41	बैंगलौर	कर्नाटक	17-01-2014
42	ब्रिसबेन	आस्ट्रेलिया	18-04-2014
43	कन्याकुमारी	तमिलनाडु	28-01-2016
44	मंगलगिरि	आन्ध्रप्रदेश	15-01-2018
45	बीरगंज	नेपाल	03-03-2019
46	हैदराबाद	तेलंगाना	02-01-2020
47	मुम्बई	महाराष्ट्र	21-02-2024

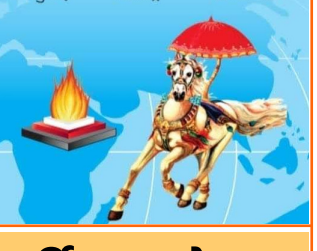

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

परम पूज्य गुरुदेव का प्रत्यक्ष शरीर पुरुष प्रधान था पर हृदय और अन्तःकरण में माँ की सत्ता ओत-प्रोत थी। उनका रोम-रोम गायत्रीमय था। वे आद्यशक्ति के सजीव श्रीविग्रह थे। जीवनभर उन्हीं की लीलागान करने वाले उन देवपुरुष को अन्त में माँ ने अपनी ही गोद में समाहित कर लिया। महाप्रयाण से पूर्व उन्होंने घोषणा की थी, जो कार्य स्थूल शरीर से संभव नहीं हुआ उससे लाखों गुना कार्य कारण सत्ता करेगी। अब तक जो हो चुका था, वही क्या कुछ कम था? आगे की तो कल्पना कर सकना भी संभव नहीं था।

महाकाल किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, वह केवल जागने और साथ देने वालों पर प्रकट होता और अनुग्रह करता है। वह लाखों लोग इस तथ्य के साक्षी हैं कि इस पटाक्षेप के पश्चात् एक वर्ष में ही संपन्न शक्ति साधना एवं उसकी पूर्णाहुति से कितनी जबर्दस्त शक्ति प्रस्फुटित हुई, देव संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने, असुर संस्कृति को मार भगाने के लिए एक जुट हुए देवत्व का शपथ समारोह कितना बृहत् और व्यापक था? जिस तरह प्राचीन काल में भगवती हारे हुए देवताओं की रक्षा का उद्घोष करती रही है, उसी तरह शपथ समारोह के अवसर पर भी देव संस्कृति दिग्विजय दशाश्वमेधों की घोषणा हुई। यहाँ से महाकाल के युग निर्माण संकल्प का उत्तरार्द्ध प्रारंभ हुआ।

नवंबर 1992 के अश्वमेध विशेषांक अखण्ड ज्योति में ये पंक्तियाँ प्रथम अश्वमेध यज्ञ के सम्बन्ध में उल्लेखनीय हैं- तब यह समझ में नहीं आ रहा था कि अश्वमेध स्तर के आयोजन सुने तो गये हैं महाकाल ने उँगली पकड़कर जिस स्थिति तक पहुँचा दिया है, वह स्वतः में किसी अदृश्य सत्ता के चमत्कार से कम नहीं है। यह अश्वमेध अंक जब तक लोगों के हाथों में पहुँचेगा, तब तक प्रथम अश्वमेध अपनी तैयारियों के अन्तिम चरण में होंगे। इस समय वातावरण एक अव्यक्त आत्मविश्वास से भरा हुआ है। सर्वत्र एक ही स्वर, एक ही सृष्टि, एक ही सृजन गूँज रहा है, जिसका नाम है- देव संस्कृति दिग्विजय।

प्रथम अश्वमेध यज्ञ की भूमिका- शपथ समारोह में वंदनीया माताजी ने देव संस्कृति दिग्विजय अभियान की चर्चा की थी, उसी के अन्तर्गत पहला पत्र मुझे 24/06/92 को दिया गया। उसमें लिखा गया था देव संस्कृति दिग्विजय और दशाश्वमेध कार्यक्रम अब पूर्ण सुनिश्चितता की ओर बढ़ रहे हैं। अपवाद जैसी परिस्थितियों में ही उन्हें रोका जा सकता है। पहला कार्यक्रम राजस्थान के जयपुर में ही रहेगा। सम्पूर्ण जिम्मेदारी आप पर रहेगी। सहायता के लिए श्री मूंदड़ा जी, श्री ओम जी, श्री मदन जी, श्री खंडेलवाल जी जयपुर से तथा कुछ अन्य व्यक्ति राजस्थान से लिए जा सकते हैं। इस सन्दर्भ में पहली मीटिंग जयपुर में आप से गुरुपूर्णिमा पर परामर्श के बाद रखेंगे। मैं शान्तिकुञ्ज गया, वहाँ कार्यक्रम को अन्तिम स्वरूप दिया गया तथा वंदनीया माताजी ने तिलक लगाया, दाहिने हाथ में कलावा बांधा तथा कहा कि सबको कह देना जयपुर के इतिहास में ऐसा कार्यक्रम न कभी पहले हुआ और न आगे होगा। फिर 12 जुलाई को एक पत्र सभी कार्यकर्त्ताओं को भेजा गया जो निम्नानुसार है। शपथ समारोह के समय अनेक निर्धारणों में सर्वोपरि महत्व का निर्णय देव संस्कृति दिग्विजय अभियान का है।

सादगी से मना शांतिकुंज अधिष्ठात्री का जन्मदिन

अपने 71वें जन्मदिन पर श्रद्धालुओं से भेंट करती श्रद्धेया शैल जीजी

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेया शैलदीदी का 71वाँ जन्मदिन सादगी से मनाया गया। इस दौरान वैदिक पद्धति से दीप महायज्ञ के साथ जन्मदिवस मनाया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने मंगल तिलक कर पुष्पाहार भेंट किया। पश्चात् शांतिकुंज, देसंविवि परिवार ने पुष्पगुच्छ भेंटकर दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की मंगलकामना की। तो वहीं शांतिकुंज के नौनिहालों ने भी अपनी शुभेच्छा प्रकट की। इस दौरान देश-विदेश के गायत्री परिजनों ने भी अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

करोड़ों गायत्री परिवार में ममता व प्यार लुटाने वाली श्रद्धेया शैलदीदी ने गायत्री परिवार के संस्थापकद्वय पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा के बाद जहाँ कुशल संगठक के रूप में इस परिवार की बागडोर सँभाला, तो वहीं उन्होंने नारी सशक्तिकरण के तहत देश-विदेश में नारियों को पर्दाप्रथा, मूढ़मान्यताओं से निकालकर उन्हें न केवल घर, परिवार समाज में समुचित सम्मान दिलाया है अपितु धर्म-अध्यात्म से जोड़कर वैदिक कर्मकाण्ड परंपरा में पारंगत किया और उन्हें ब्रह्मवादिनी की भूमिका संचालित करने योग्य बनाया। आज उनके कुशल मार्गदर्शन व नेतृत्व में देश-विदेश की लाखों महिलाएँ यज्ञ और विभिन्न संस्कारों का सफल संचालन कर रही हैं। करोड़ों लोगों के विराट् जन समूह को आश्वस्त करते हुए श्रद्धेया शैलदीदी कहती हैं- 'यह दैवीय शक्ति द्वारा संचालित मिशन है और यह सतत आगे ही बढ़ता जायेगा। कोई भी झंझावत इसे हिला नहीं सकेगा।'

इससे पूर्व श्रद्धेया शैलदीदी के जन्मदिन के अवसर पर प्रातः 27 कुण्डीय यज्ञ में उनकी उत्तम स्वास्थ्य हेतु यज्ञाहुतियाँ डाली गयीं। सैकड़ों पीत वस्त्रधारी नर-नारियों ने मंगल प्रभात फेरी निकालीं। वहीं श्रद्धेया शैलदीदी के उत्तम एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना के साथ सामूहिक प्रार्थना की गयी। सायंकाल गीता जयंती के अवसर पर उत्साहपूर्वक दीपमहायज्ञ संपन्न हुआ। दीपयज्ञ में सभी परिजनों ने दीपक प्रज्वलित कर मन्त्रों की भावनात्मक आहुति देकर श्रद्धेया जीजी के दीर्घायु की कामना की।

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश का वार्षिक सम्मेलन (युग सृजेता समारोह), झाँसी

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

युग सृजेता समारोह में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा सम्मानित होते अतिथि

उत्तर प्रदेश में गायत्री परिवार के प्रांतीय युवा संगठन की वार्षिक सक्रियता का समापन एवं हस्तांतरण कार्यक्रम युग सृजेता समारोह इस वर्ष 1 से 4 दिसम्बर, 2023 की तिथियों में झाँसी में सम्पन्न हुआ। वीरांगना लक्ष्मीबाई की क्रान्तिकारी पावन नगरी झाँसी में पैरामेडिकल ट्रेनिंग कॉलेज के स्टेडियम में आयोजित प्रान्तीय युग सृजेता समारोह में उत्तर प्रदेश के 75 जनपद एवं मध्य प्रदेश के 5 जनपदों के लगभग 5000 युवाओं तथा गायत्री परिजनों ने भाग लिया। अगले वर्ष की सक्रियता का दायित्व नजीबाबाद-मुरादाबाद जोन को सौंपा गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ 1 दिसम्बर 2023 को अनुशासन गोष्ठी के साथ हुआ। तत्पश्चात् दिनांक 2 दिसम्बर 23 को वीरांगना लक्ष्मीबाई के प्रपौत्र आदरणीय श्री अरूण राव तथा उनके पुत्र श्री योगेश राव द्वारा ध्वजारोहण व राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। यह दो दिवसीय कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से पहुँचे उत्तर जोन समन्वयक श्री नरेन्द्र ठाकुर, युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह, श्री मंगल गढ़वाल एवं नीरज जी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने प्रांतीय स्तर पर युवा सक्रियता की समीक्षा करते हुए उत्साहवर्धन किया और भावी सक्रियता के लिए सामयिक संदेश दिया। दो दिवसीय विचार-विमर्श एवं चिंतन-मनन से वर्ष 2024 की सक्रियता के संकल्प उभरे।

दीपयज्ञ की दिव्य प्रेरणाएँ

3 दिसम्बर की सायं दीपयज्ञ की दिव्य वेला में कार्यक्रम स्थल 24000 प्रज्वलित दीपों की दिव्यता से जगमगा उठा। इस पावन अवसर पर गुरुद्वारे से युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के आगमन से उपस्थित 5000 श्रद्धालुओं के अंतःकरण में नवचेतना के दीप जलाने वाली दिव्य ज्योति जैसा था।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उपस्थित लोगों को गायत्री परिवार का सदस्य होने का गौरव बोध कराते हुए कहा कि फेसबुक के दोस्त मुसीबत में काम नहीं आते, आपदा में अपने गायत्री परिवार के सदस्य ही सबसे पहले काम आते हैं। उन्होंने कहा कि युवा अभाव के नहीं, स्वभाव के कारण गलत काम कर रहे हैं। हमने भीड़ तो पैदा कर दी, किन्तु आदमी को अकेला छोड़ दिया है।

शांतिकुंज में तीन दिवसीय राज्य स्तरीय कला उत्सव का शुभारंभ

● प्रखर भदौरिया

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में चल रहे तीन दिवसीय राज्य स्तरीय कला उत्सव 2023-24 का आज समापन हो गया। हरिद्वार, देहरादून सहित उत्तराखण्ड के सभी तेरह जिलों के चयनित कक्षा 9 से 12 तक के 248 विद्यार्थियों ने दस विधाओं में अपना हुनर दिखाया। समापन सत्र में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजयी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। ये विजयी विद्यार्थी आगामी जनवरी माह में होने वाले राष्ट्रीय कला उत्सव में उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करेंगे।

तीन दिन चले इस उत्सव में अल्मोडा के 17, बागेश्वर के 19, चमोली के 21, चंपावत के 17, देहरादून के 20, हरिद्वार के 23, नैनीताल के 16, पौड़ी गढ़वाल के 23, पिथौरागढ़ के 21, रुद्रप्रयाग के 11, टिहरी गढ़वाल के 17, ऊधमसिंह नगर के 21 और उत्तरकाशी के 22 छात्र-छात्राओं ने शास्त्रीय संगीत (गायन), पारंपरिक लोकगीत (गायन), वादन, शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य, एकल अभिनय, दृश्य कला (द्विआयामी), दृश्य कला (त्रिआयामी) और स्थानीय खिलौने एवं खेल की श्रेणी में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

इसमें गीतांजलि जोशी-अल्मोड़ा, वंदना कौशल-बागेश्वर, दिव्यांशु-चमोली, ध्रुव वर्मा-देहरादून, जयेन्द्र-हरिद्वार, आरोही पंत-नैनीताल, प्रखर जोशी-नैनीताल, भावेश पाण्डेय-नैनीताल, चांदनी-पौड़ी गढ़वाल, हेमा चक्रवर्ती-पौड़ी गढ़वाल, पवन कुमार-ऊधमसिंह नगर आदि ने अपनी अपनी विधा में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अव्वल रहे, तो वहीं खुशी हातेली, अर्जुन, मनीषा भट्ट, आदित्य गिरि, सुमित बिष्ट, समीर तिवारी, प्रियल जोशी, योगेश्वरी, दिव्यांशु त्रिपाठी, आंचल, अमित सैनी आदि को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। कई प्रतियोगिता में विद्यार्थियों के बीच काँटे की टक्कर रही और निर्णायकों को काफी मेहनत करनी पड़ी।

उत्सव में नैनीताल की सेंट थेरेसा काठगोदाम हल्द्वानी की कु. दीपिका काण्डपाल ने कर्नाटक की नृत्य प्रस्तुति यक्षगान से सभी को रोमांचित किया। दिव्यांशु त्रिपाठी ने तबला वादन एवं प्रखर जोशी ने बांसुरी में राग पुरिया में एक ताल एवं तीन ताल में गत प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। हर्षिता जोशी ने शास्त्रीय गायन, सुयश सति-कुमांऊनी लोकगीत, भावेश पाण्डेय-शास्त्रीय गायन, अवनि धपोला- कत्थक नृत्य आदि की प्रस्तुती ने खूब तालियाँ बटोरी।

सहायक राज्य परियोजना निदेशक उत्तराखण्ड श्री प्रद्युम्न रावत ने बताया कि समग्र शिक्षा के अंतर्गत राज्य स्तरीय कला उत्सव 2023-24 का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड के विद्यार्थियों में लोक उत्सवों के प्रति रुझान पैदा करना एवं उसका संवर्धन करना है। समापन अवसर पर राज्य भर से आये छात्र-छात्राओं के अलावा अध्यापक, आध्यापिकाएँ एवं अभिभावक गण उपस्थित रहे।

अश्वमेध - वन्दना

हे ! अश्वमेध । शत् शत् प्रणाम ।
हे ! यज्ञराज । शत् शत् प्रमाण ॥
हे ! राष्ट्र संगठक ! युग परिवर्तक ।
यज्ञऋत्तु । आनंद-धाम !
हे ! देव ! आपका यजन किया तब हुए
प्रजापति आप्तकाम ।।
हे ! अश्वमेध ! शत् शत् प्रणाम ।
हे ! यज्ञराज ! शत् शत् प्रणाम ॥
हे ! प्रभु हे ! विभु हे ! व्यष्टि, विधृति,
व्यावृत्ति ऊर्जस्वान, कोटिनमन् ।
हे ! पयस्वान, ब्रह्मवर्चस्वी, हे !
अतिव्याधी शत् शत् वन्दन ॥
हे ! दीर्घ, क्लृप्ति हे ! प्रतिष्ठाप्य !
पावनतम है तव दिव्य नाम ।
हे ! अश्वमेध शत् शत् प्रणाम
हे ! यज्ञराज शत शत प्रणाम ।।

हे ! राष्ट्र रूप ! आदित्य रूप ! हे !
सर्वदेवमय ! हे त्रिरात्र !
हे ! देव-संस्कृति विस्तारक ! तुम
असुर-विनाशक एकमात्र ।
हे ! गायत्री-साधना लय। सावित्री मय
तेजोभिराम ।
हे ! अश्वमेध शत् शत् प्रणाम ।
हे ! यज्ञराज शत् शत् प्रणाम ।।
युग-युग में करते यजन रहे पृथु,
अबरीष बलि, बाहु, राम ।
काशीनरेश अरु उग्रसेन, धर्मराज
युधिष्ठिर नृप ललाम ।
हे ! देव आपके आराधन से सभी हुए थे
पूर्ण काम ॥
हे ! अश्वमेध ! शत् शत् प्रणाम ।
हे ! यज्ञराज ! शत् शत् प्रणाम ।।
सप्रति संवर्द्धित असुर-शक्तियाँ
मानवता करती क्रन्दन ।
इस संधि-काल में प्रणत भाव से देव
आपका अभिनंदन ॥
निज पशुत्व-बलि अर्पित करते अब
स्वर्ग बना दो धराधाम ।
हे ! अश्वमेध ! शत् शत् प्रणाम ।
हे ! यज्ञराज ! शत् शत् प्रणाम ।।

राष्ट्र व विश्व कल्याण के निमित्त एक महान आध्यात्मिक प्रयोग है-अश्वमेध महायज्ञ

शतपथ ब्राह्मण में समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिए (प्रजापति) द्वारा अश्वमेध यज्ञानुष्ठान किए जाने का विवरण इस प्रकार है-

प्रजापतिरकामयत। सर्वान्कामानाप्नुया 11
सर्वाव्यष्टीर्व्यश्नुवीयेति सऽएतमश्वमेधं त्रिरात्रं
यज्ञक्रतुमपश्यत्तमाहरत्तेनायज त तेनेष्ट्वा
सर्वान्कामानाप्नोत्सर्वा व्यष्टीत्श्नुत सर्वान्ह वै
कामानाप्नोति सर्वाव्यष्टीर्व्यश्नुते योऽश्वमेधेन यजते।
-शत. 13/4/1/1

प्रजापति ने इच्छा की कि मेरी सभी कामनायें पूरी हो जायें, मुझे सभी पदार्थ मिलें। उसने इस त्रिरात्र (तीन रात वाले) यज्ञक्रतु, अश्वमेध को देखा, उसको ले आया। उससे यज्ञ किया। इस यज्ञ को करके सब कामनाओं को पूरा किया। सब पदार्थों को प्राप्त किया। जो अश्वमेध यज्ञ करता है, उसकी सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। वह सभी पदार्थों को प्राप्त कर लेता है। (अखण्ड ज्योति नवम्बर, 1992)

यज्ञ ज्ञान है, यज्ञ विज्ञान है, जिससे चारों ओर दिव्यता का आलोक फैले, यज्ञ एक ऐसा दैवीय विधान है। अनेकों प्रकार के यज्ञीय प्रयोगों का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थों में पढ़ने को मिलता है, जैसे ब्रह्म यज्ञ, संयम यज्ञ, इंद्रिय यज्ञ, आत्म यज्ञ, द्रव्य यज्ञ, तप यज्ञ, योग यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, प्राण यज्ञ, आहार यज्ञ, वाणी यज्ञ, मन यज्ञ आदि। स्पष्ट है कि बिना यज्ञ के व्यक्ति का जीवन सूखे हुए उस पेड़ की भाँति प्रतीत होता है जिस पर हरी पत्तियों का कोई नामोनिशान नहीं। जिस प्रकार सूखा हुआ पेड़, पेड़ गुणों से सम्पन्न नहीं कहा जा सकता उसी प्रकार यज्ञ से रहित मनुष्य, मानवी गुणों से परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

यज्ञ एक ऐसा सार्वभौमिक सनातनी प्रयोग है जिसके माध्यम से भौतिक सम्पदा से लेकर आध्यात्मिक सम्पदा एवं शारीरिक स्वास्थ्य से लेकर मानसिक स्वास्थ्य की प्रार्थनाओं को साकार होते देखा जाता रहा है। ये प्रयोग केवल पुराणों अथवा इतिहास के कुछ ग्रंथों तक अथवा एक वर्ग विशेष तक सीमित हो गये होते यदि भारतीय संस्कृति की इस अतुलनीय विरासत को युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने वैज्ञानिक आध्यात्मवाद के रूप में पुनर्जीवित करने का बीड़ा न उठाया होता एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या ने शोध के माध्यम से आगे न बढ़ाया होता। वास्तव में जिसे सनातनी कहा गया है वह तो शाश्वत है, अतः कुछ समय के लिये उसके प्रभाव को लोगों के मध्य नजर अंदाज भले ही होते देखा जा सके किंतु ये समय बहुत अधिक नहीं हो सकता। आचार्य जी के लगाये वे बीज अब वट वृक्ष बनते दिखायी दे रहे हैं। कदाचित इसी कारण यज्ञ की ऊर्जा वातावरण और पर्यावरण दोनों को आरोग्य प्रदान करती हुई चारों ओर देखी जा सकती है।

अवश्मेध यज्ञ राष्ट्र एवं विश्व कल्याण की मंगल भावना से किया जाने वाला एक महान आध्यात्मिक प्रयोग है, एक महान आध्यात्मिक महानुष्ठान है। विश्व की प्रथम संस्कृति, विश्व संस्कृति, सनातन संस्कृति- देव संस्कृति आदि विभिन्न नामों से प्रचलित व प्रतिष्ठित भारतीय संस्कृति सदैव से ही अपनी विश्व विजयनी वैजयन्ती वाहक, (अवश्मेध) की यज्ञाश्व-शक्ति से राष्ट्र मंगल व विश्व मंगल की अहनिश मंगल भावना व मंगल करती रही है, यह सत्य वेदों, उपनिषदों पुराणों व अन्यान्य धर्म ग्रन्थों तथा ऐतिहासिक विवरणों से पुष्ट होता है।

युधिष्ठिर ने भी तीन अवश्मेध यज्ञ किए और उस महान परम्परा का निर्वाह राजा परीक्षित तथा जन्मजय ने भी किया। कलियुग में भी गुप्त वंश के द्वितीय सम्राट समुद्रगुप्त के द्वारा अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराने का इतिहास मिलता है। बाद में अपने महान भारत ने अपनी इस महान सांस्कृतिक-आध्यात्मिक विरासत को शक, हूण, कुषाण, पठान, मुगल, अंग्रेज आदि के आगमन व आक्रमण के कारण संक्रमण की स्थितियों से गुजरते हुए देखा। फिर शताब्दियों की चिर प्रतिक्षा के बाद आधुनिक युग में देवभूमि भारत की पुण्य धरा पर अवतरित गायत्री के सिद्ध साधक इस युग के विश्वमित्र, अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक और मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के सूत्रधार व 21 वीं सदी उज्जवल भविष्य के उद्घोषक परम पूज्य गुरुदेव युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी व वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा ने भारत को सशक्त व समृद्ध बनाने व विश्व कल्याण की मंगल भावना से दैवीय सत्ता के निर्देश पर अश्वमेध गायत्री महायज्ञों की अभिनव व पावन श्रृंखला का सूत्रपात किया व भारत के साथ विश्व के अन्य देशों में भी अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए।

देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के उसी क्रम में इन दिनों परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य संरक्षण में अश्वमेधिक महायज्ञों की श्रृंखला फिर से चल पड़ी है और अश्वमेधिक यज्ञों की पावन श्रृंखला का 47 वां अश्वमेध यज्ञ गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वाधान में 21-25 फरवरी के मध्य महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई में सम्पन्न हो रहा है। भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई में आयोजित होने वाला यह अश्वमेध अपने आप में अनुपम अद्वितीय है जो पूरे विश्व वसुन्धरा तक भारतीय संस्कृति का शंखनाद करने में सक्षम होगा।

संपादक की कलम से

अखण्ड ज्योति से

यज्ञ,महायज्ञ,अश्वमेध यज्ञ

यज्ञों को तीन चरणों में विभक्त किया गया है। व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष में यज्ञों की भूमिका और सामाजिक जीवन में परिष्कार के लिए महायज्ञ सम्पन्न किए जाते रहे हैं। पर जब समूचे राष्ट्र और वातावरण के आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव होती थी तब सार्वभौम स्तर में अश्वमेधों की ही परम्परा रही है। उनका प्रतिफल भी उसी तरह क्रमशः बृहत्तर है।

श्रीमद्भागवत् में यज्ञ की महत्ता का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। अनेकों ऐसे प्रसंगों का भागवत में वर्णन है जिससे यज्ञ की महाशक्ति का पूरा परिचय मिलता है। सृष्टि का आरंभ यज्ञ से ही हुआ, इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है। जिज्ञासा के अनुसार उत्तर रूप में ब्रह्मा जी विराट् भगवान के स्वरूप का वर्णन करते हैं

उनके यज्ञ के पशु, वनस्पति, कुशा और देवताओं के यज्ञ करने योग्य भूमि और जिसमें बहुत से गुण भरे हों ऐसे समय की रचना की। सब पात्रादि रचे, औषधि, घृतादिक, मधुरादिक, स्वर्णादि धातु, मृत्तिका, जल, ऋक् यजु, साम एवं अथर्ववेद, चार ब्राह्मण और जिससे हवन किया जाय ऐसे कर्मों की भी सृष्टि की।

ब्र. पू. पूर्वभाग-प्रक्रियावाद अ. 1, श्लोक 5-6-7 उल्लेख है कि कल्प के आरंभकाल में जिस समय सृष्टि की रचना की जा रही थी, उस समय अति पुण्यमय महायज्ञ का अनुष्ठान सहस्र संवत्सर के लिए हुआ था। इस महायज्ञ के अनुष्ठाता स्वयं ब्रह्मा जी थे, उनकी पत्नी इला वहाँ उपस्थित थीं। यह काम स्वयं बुद्धिमान, तेजस्वी मृत्युदेव ने किया था।

राजा दक्ष ने अपने यज्ञ का विध्वंस होने तथा सुपुत्री सती के निधन के उपरान्त बहुत दुख माना और शिवजी से क्षमा माँगने के पश्चात् अपनी भूल के प्रायश्चित रूप में ही विशद् यज्ञ को पूरा किया। इसका वर्णन भागवत के चतुर्थ स्कन्ध के सातवें अध्याय श्लोक 16-18 में इस प्रकार है- दक्ष ने अपना अपराध क्षमा कराया और ब्रह्माजी से सम्मति लेकर उपाध्याय, ऋत्विज, अग्नि सहित यज्ञकर्म आदि का सुन्दरता सहित विस्तार किया। विष्णु के निमित्त, यज्ञ सम्पूर्ण करने के हेतु प्रथमादिक वीरों की शुद्धि के लिए श्रेष्ठ ब्राह्मणों को दिया। अध्वर्यु ने जब हवि हाथ में लेकर यजमान सहित विशुद्ध बुद्धिपूर्वक हवन कर भगवान का ध्यान किया उसी समय उसे विराट् पुरुष के दर्शन हुए।

ऋषभदेव जी भगवान के अवतार माने जाते हैं। उन्हीं के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ है। भरत ने महायज्ञों द्वारा ही इस देश को तपोभूमि बनाया था। तीर्थों की स्थापना वहाँ-वहाँ ही हुई जहाँ-जहाँ बड़े महायज्ञ हुए। प्रयाग शब्द में (प्र) उपसर्ग को हटा देने पर (याग) शब्द रह जाता है। याग-यज्ञ की प्रचुरता रहने के कारण ही यह स्थान तीर्थराज बना। काशी, वाराणसी के दशाश्वमेध घाट-इस बात के साक्षी हैं कि इन स्थानों पर दस बड़े-बड़े यज्ञ हुए हैं और उसी के प्रभाव से इन स्थानों को इतनी प्रमुखता मिली। स्कन्द पुराण ख. 4 उ. सं. अ. 52 श्लोक 68-69 में कहा गया है कि काशीराज दिवोदास ने काशी नगरी में दस अश्वमेध नामक यज्ञों से महायज्ञेश्वर भगवान का यजन किया। उस दिन से दशाश्वमेध नाम से वह तीर्थ प्रख्यात हुआ। पहले उसका नाम रुद्रसरोवर था। दस अश्वमेध करने से ही उस काशी का नाम दशाश्वमेध तीर्थ हुआ। ऋषियों ने सूत जी से प्रारंभिक महायज्ञ के स्थान, समय प्रकार आदि के सम्बन्ध में प्रश्न किया । उसके उत्तर में सूत जी ने जो कहा वह वायु पुराण प्र. पा. द्वि. अध्याय में इस प्रकार वर्णित है- जहाँ विश्व की सृष्टि की इच्छा से सृष्टि के आदिकाल में सृष्टाओं ने हजारों वर्ष पर्यन्त पवित्र यज्ञ किया था। जिस यज्ञ में स्वयं तप ही यजमान और ब्रह्मा ही ब्रह्मा बने थे। महान आत्माओं के इस दीर्घ एवं विशाल यज्ञ में धर्म की नेमि घूमते-घूमते विशीर्ष हो गयी थी इसलिए ऋषि-मुनि पूजित उस प्रदेश का नाम नैमिषारण्य पड़ गया।

अश्वमेध यज्ञों की फलश्रुतियाँ तो और भी अधिक विशद् हैं। मध्ययुग में अश्वमेध का नाम लेते ही युद्ध का सा बोध होने लगा था जब कि यह लोक कल्याण की दृष्टि से सम्पन्न किए गए विशिष्ट महायज्ञ हुआ करते थे। इन अश्वमेध यज्ञों की महिमा से वेद, उपनिषद्, दर्शन एवं पुराणों के पन्ने भरे पड़े हैं। प्राचीनकाल में वह प्रकृति संतुलन, देव अनुग्रह और राष्ट्र संगठन के रूप में सम्पन्न किए जाते रहे हैं। शास्त्रकार का कथन है अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने से गया तीर्थ जाने का पुण्यफल, गंगा यमुना स्नान का पुण्यफल तथा कोटि होम का पुण्यफल मिलता है।

मनुष्य शरीर में सदचिन्तन के देवता और दुष्प्रवृत्ति के दानव-पशु दोनों विद्यमान होते हैं। मनुष्य शरीर में तो यह निराकार होते हैं, पर वे जब साकार हो जाते हैं, तो ये बाहर दिखाई देने वाले पशु बन जाते हैं। अर्थात् बाहर के पशु भाव ही जीव को आकार पशु योनि में ले जाते हैं। श्येन (दाज) घमंड का रूप है। गिद्ध लोभ का प्रतिनिधि, चापलूसी से कुत्ते की पशु योनि मिलती है, अज्ञानग्रस्त जीव उल्लू या गधे के रूप में जाना जाता है। पशु प्रवृत्तियां जब घोड़े जैसी शक्तिशाली और सर्वव्यापी हो जाती हैं, तब अश्वमेध आयोजन किए जाते हैं। जिनमें इन पशु प्रवृत्तियों की बलि देने का विधान ही अश्वमेध है।

अश्वमेधों की तैयारियों के जो संदर्भ और प्रकरण आर्षग्रन्थों में मिलते हैं उनको पवित्रता इस तथ्य को खंडित करती है कि इन यज्ञों में किसी तरह की जीव हिंसा होती थी।

हिन्दू धर्म कोश का कथन है - अश्वमेध का घोड़ा जिस दिन से चतुर्दिक भ्रमण के लिए छोड़ा जाता था, उसी दिन से प्रतिदिन प्रातः, मध्यान एवं सायं सविता के लिए तीन इष्टियों की संध्या करती थीं। सविता को प्रातः सत्यप्रसव के नाम से, मध्याहन में प्रत्तविता के नाम से तथा सायंकाल में आसविता के नाम से पूजित किया जाता था। यह तथ्य आश्वलायन श्रौतसूत्र के 10/6/8 में लाट्यायन श्रौतसूत्र के 2/9/10 में तथा कात्यायन श्रौतसूत्र के 20/2/6 में वर्णित है ।

अर्थात्- गायत्री उपासना पूरे वर्ष भर तक चलती थी। उसके बाद तीन दिन तक अश्वमेध यज्ञ चला था।

गन्धर्वी अस्य रशनामगृभ्णात् सूरादश्वं वसवो निरतष्ट ।
-ऋग्वेद 1/163/2

वसुओं ने यज्ञीय अश्व को सूर्य से बनाया है (अश्वमेध की सफलता के लिए सूर्य (गायत्री) उपासना अनिवार्य है।) इसी रूप में इन अश्वमेध आयोजनों में भाग लेना चाहिए और अपना जीवन कृतकृत्य करना चाहिए।

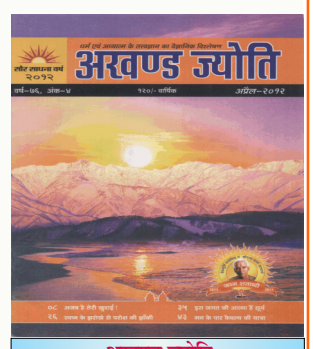

अखण्ड ज्योति,
दिसंबर- 1992 , पृष्ठ 22-24

विचार शक्ति को पहचानें

- चंचल मन में अच्छे विचार नहीं आते।
- व्यक्ति का चरित्र विचारों के अनुकूल ढलता है।
- गंदे विचारों से रोगों की उत्पत्ति और अच्छे विचारों से आरोग्य वृद्धि होती है।
- प्रतिकूल परिस्थितियाँ बदलनी है तो विचार बदलिये।
- हम अपने विचारों के अनुकूल ही अंतरिक्ष से विचार आकर्षित करते हैं।
- विचारों में शक्ति एकाग्रता से उत्पन्न होती है।
- विचारों के बीज बोने में सावधान रहो ये निष्फल नहीं जाते।
- बलवान विचार निर्बल विचारों को जीत लेते हैं।
- तुम तभी तक निर्बल हो जब तक तुच्छ विचार तुम्हें घेरे हैं।
- विचार तुम्हारे अधीन है न कि तुम विचारों के।
- सुख दुःख का कारण प्रारब्ध नहीं विचार है।
- महान विचार महान परिस्थितियों को जन्म देते हैं।
- विचार शक्ति सेना से भी अधिक बलवान है।
- व्यक्ति का चरित्र विचारों के अनुकूल ढलता है।

ऋषि चिंतन

- प्रगति के लिये संघर्ष करो। अनीति को रोकने के लिए संघर्ष करो।
- जो अपना कर्तव्य करने से चूकता है वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है।
- उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक तुम्हे सफलता न मिल जाए।
- दुःख और श्रम मनुष्य के परम मित्र हैं।
- दुःख के बिना हृदय पवित्र नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यता का विकास नहीं होता।
- परमात्मा जिसे जीवन में कुछ विशेष अनुदान देना चाहता है उसकी सुविधाओं को समाप्त कर देता है।
- संसार में ऐसी कोई विभूति नहीं है जो तीव्र आकांक्षा और प्रबल पुरुषार्थ के आधार पर प्राप्त न की जा सकती हो।
- नारी प्रकृति की बेटी है, उसका हृदय कोमल है। उसका हृदय न दुखाओ, उस पर विश्वास करो।
- मनुष्य का स्वभाव नवीनता प्रिय है। अपना दीपक आप स्वयं बने ।
- अपनी विन्रमता, दूसरों का सम्मान, बोलने में मिठास यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार है।
- उपकार सौदे की तरह मत करो। उसे कर्तव्य मानकर करने से ही संतोष मिलता है।
- आगे बढ़ना, उन्नति करना, ऊपर उठना, विकसित होना जीव का स्वाभाविक धर्म है।
- उदासीन एवं निराश व्यक्ति की समस्त शारीरिक व मानसिक शक्तियाँ नष्ट हो जाती है। जीवन का सच्चा सदुपयोग ही जीवन का महामंत्र हैं।
- अपने पुरूषार्थ से अर्जित ऐश्वर्य का ही दूसरा नाम सौभाग्य है।
- प्रेम व्यवहार संसार का प्रत्यक्ष अमृत रस हैं, जिसको दोगे वही प्रसन्न होकर तुम्हारा हो जायेगा।
- शालीनता बिना मोल मिलती है लेकिन उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।
- आज का काम कल पर मत टालिये। उज्जवल भविष्य के प्रति आशान्वित रहें।

अश्वमेध अब आया है

जाग उठो हे। प्रज्ञा पुत्रों, अश्वमेध अब आया है।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण घोड़ा आज बढ़ाया है॥
करो पाशविकता उन्मूलन, यह उद्घोष सुनाया है।
महाभारत के बाद देश में स्वर्णिम अवसर आया है।
देव संस्कृति दिग्विजय यात्रा, आज करो पूरी भाई।
पूज्य गुरूजी का संरक्षण, युग संधि बेला आई॥
माताजी के निर्देशों पर, सबने कदम बढ़ाया है।
जाग उठो हे! प्रज्ञा पुत्रो, अश्वमेध अब आया है।।

Managing Editor - Dr. Chinmay Pandya
Executive Editor - Prof. Sukhnandan Singh
Assistant Editor - Dr. Deepak Kumar

Editorial Panel & Designing
Mr. Saurabh Kumar, Mr. Rajat Pandey & TEAM JMC

मेधा को जो जगाऐं, वह है अश्वमेध

हे यज्ञाग्ने! तू महान और सब पदार्थों को प्राप्त कराने वाला है। अतः इसापूर्वक समिधा प्रदान ई। रूपाकर मुझे बद्धा और मेधा का। इसी प्रकार ऋग्वेद का ऋषि एक स्थान पर कहता है

इमं यज्ञं मेधावन्तं कृधीः (प्रभो! बारे इस यज्ञ को मेधावान बना दो) तथा कारवेदी मेधां अस्मासु धेहि (हे यज्ञाग्ने ! हमारे अन्दर मेधा को धारण करा दो)।

उपरोक्त श्रुति वचनों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया जा रहा है कि विराट अनेक स्तर के यज्ञों का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन एक व्यापक स्तर पर प्रसुप्त पड़ी प्रतिभा के मेधा के जागरण के लिए भी होता है। यह मनुष्य की प्रतिभा ही है, जिसने उसे अन्य जीवधारियों से भिन्न बनाया है। इसी के बलबूते वह वैज्ञानिक के रूप में प्रकृति का रहस्योद्घाटन करने और प्राणी जगत का भाग्यविधाता होने का दावा करता है। अनेकानेक प्रकार के तत्त्वदर्शन के सिद्धान्त गढ़ने से लेकर शासन और समाज की संरचना तथा साहित्य का अक्षय भण्डार खड़ा कर देना एवं पृथ्वी को अनगढ़ता की स्थिति से सुगढ़, सुविकसित स्थिति में पहुँचा देने का पराक्रम मानवी मेधा प्रतिभा का ही चमत्कार है। संभवतः इसी कारण ऋषि कहते आये हैं- न मानुषात् हि श्रेष्ठतरं किंचित (मनुष्य से श्रेष्ठ इस दुनिया में कोई अन्य नहीं है)।

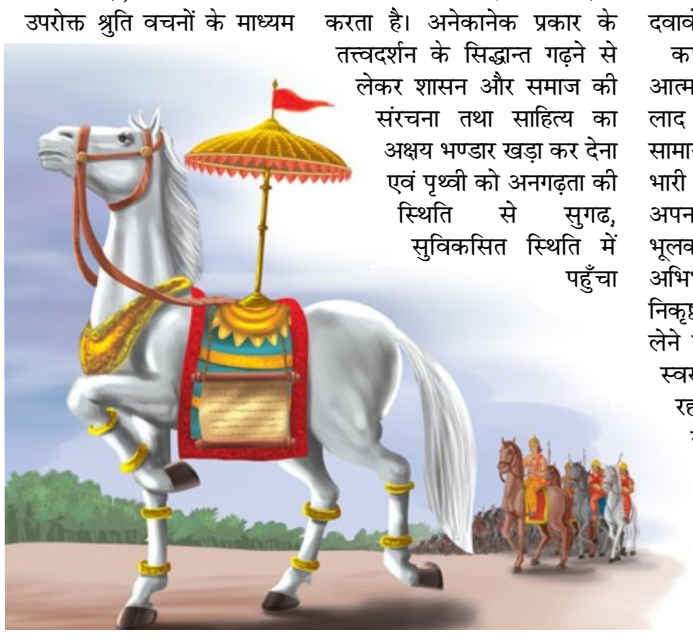

इतना सब होते हुए भी विडम्बना वही सामने आ कर खड़ी हो जाती है कि प्रतिभा का विपुल भण्डार अंतः सत्ता में भरा होते हुए भी उसे उभरने-प्रकट होने का अवसर उन दवावों के कारण नहीं आ पाता जो,

कषाय-कल्मषों के रूप में आत्मसत्ता के ऊपर स्वेच्छापूर्वक लाद लिए गये हैं। लकड़ी सामान्यतया है, किन्तु यदि उस पर भारी चट्टानें बाँध दी जायें तो वह अपना स्वाभाविक गुण तैरना भूलकर डूब जाती है। विभूतियों से अभिभूषित होने के बावजूद मनुष्य निकृष्टता की चट्टान सिर पर लाद लेने के उपरान्त अपना वास्तविक स्वरूप दिखा पाने की स्थिति में रह ही नहीं जाता। आज के समाज का जो भी स्वरूप हमारे समक्ष है, वह इसी विडम्बना के कारण ऐसा दृष्टिगोचर होता है। संव्याप्त अवांछनीयताओं से जूझकर उन्हें परास्त करना तथा नवयुग की सृजन व्यवस्था को कार्यान्वित करने की समर्थता इस कारण नहीं संभव बन पा रही है कि ये दोनों ही कार्य तेजस्वी, मेधावान, जाग्रत, प्रतिभाशालियों के बलबूते ही संभव हो सकते हैं। आड़े समय में ऐसे ही व्यक्ति आगे आते व संस्कृति-समाज की नौका को उफनते समुद्र में से खेते हुए ले जाते हैं। इस प्रतिभा को समाज, राष्ट्र ही नहीं, विश्व के समष्टि के स्तर पर जगाने के लिए जिस पराक्रम की आवश्यकता है, वह भौतिक नहीं, अध्यात्म जगत से उपजने वाला तथा सुनियोजित ढंग से किया जाने वाला धर्मानुष्ठान स्तर का होने पर ही अभीष्ट उपलब्धियाँ संभव हैं।

परम पूज्य गुरुदेव का जीवन तिल तिलकर अपने जीवन का एक-एक क्षण संस्कृति की सेवा में होमकर देने वाले एक महायाज्ञिक का जीवन है। एक खुली किताब के रूप में उनके अस्सी वर्ष के जीवन के घटनाक्रम प्रमाण देते हैं कि किस तरह से वे प्रतिभा जागरण के उद्देश्य को लेकर सतत् पुरुषार्थरत रहे व संधिकाल की प्रलयंकारी तूफान अपनी प्रचण्डता का परिचय दे रहा हैं, उनने जन-जन के घर तक सतयुगी नवसृजन की उमंगें जगा दीं। आज जब कोई भी उज्वल भविष्य की बात करता नहीं दीखता, तब उनने सघन तमिस्रा के साम्राज्य में भी ब्रह्ममुहूर्त का आभाष प्राची में उदीयमान होते दीख पड़ने तथा इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य का उद्घोष खुले रूप में सबके समक्ष किया।

सरस्वती उपनिषद् में एक स्थान पर आया है- यज्ञं दधे सरस्वती (यज्ञ से हो सरस्वती प्रसन्न होती है) संभवतः उपनिषद् की इस उक्ति के वैज्ञानिक परीक्षण हेतु हो परम पूज्य गुरुदेव ने जून 1955 में गायत्री तपोभूमि मथुरा में एक सरस्वती यज्ञ गायत्री जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किया था। अपने चौबीस महापुरश्चरणों को महापूर्णाहुति वे गायत्री तपोभूमि में चौबीस कुण्डीय यज्ञ में अखण्ड अग्नि की स्थापना कर दो वर्ष पूर्व ही कर चुके थे। नवम्बर 1958 के सहस्रकुण्डीय महायज्ञ से पूर्व यज्ञ संबंधी कई प्रयोग साधक स्तर के व्यक्तियों व जनसामान्य पर किये गये। इस सबका मूल उद्देश्य था, प्रतिभा संवर्धन में यज्ञ प्रक्रिया किस प्रकार फलदायी होती है, यह जाना जाय। परम पूज्य गुरुदेव के यह शोध प्रयास अनेक विस्मयकारी परिणाम लेकर आए। मनुष्य इस यज्ञ से मेधा को शाम होते हैं तथा उनके पाए नाश होता है। वादित मनोका सताएँ पूर्ण के कारण निश्चित ही होती है।

इसी यज्ञ के विषय में आगे वे लिखते हैं कि एक कोई तक गायत्री महायज्ञ, रुद्र यज्ञ, महामृत्युंजय-यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शतचंडी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, यजुर्वेद यज्ञ, ऋग्वेद यज्ञ, अथर्ववेद यज्ञ, सामवेदयज्ञ को निरन्तर श्रृंखला द्वारा वे अश्वमेध स्तर की महायज्ञ प्रक्रिया पूरी कर उन कार्यकर्त्ताओं का उत्पादन करेंगे। क्रमशः ये यज्ञ संपन्न करने वाले भागीदारों से जप-अनुष्ठान संपन्न कराये गये। उनका पत्राचार पाठ्यक्रम से शिक्षण चला तथा प्रतिभा परिष्कार हेतु परम पूज्य गुरुदेव ने व्यक्तिगत चर्चा द्वारा उन्हें ध्यान साधना से लेकर यज्ञ प्रक्रिया में भागीदारी का सुयोग्य प्रशिक्षण भी दिया। वे लिखते हैं कि यज्ञ में प्रयुक्त मंत्रोच्चार को प्रक्रिया ही अश्वमेध की सफलता का प्राण है।

मुंबई अश्वमेध महायज्ञ

प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व निकाली बाइक रैली

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पूर्व शांतिकुंज के सैकड़ों भाई बहिनों ने बाइक रैली निकाली। रैली को व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर श्री शर्मा ने कहा कि 22 जनवरी को अयोध्याधाम में प्रभु श्रीराम का भव्य, दिव्य एवं नव्य मंदिर में विराजित होंगे, इससे पूर्व शांतिकुंज ने हिन्दुओं के दिलों में राज करने वाले प्रभु श्रीराम की जयकारों के साथ रैली निकाली।

अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने प्रभु श्रीराम के जीवन आदर्शों को अपने व्यावहारिक जीवन में शामिल करने के लिए आवाहन किया और कहा कि सनातन धर्म केवल एक धर्म ही नहीं है, वरन् यह जीवन पद्धति है।

रैली शांतिकुंज के गेट नंबर तीन से निकली और भूपतवाला होते हुए हरकी पौड़ी पहुंची। जय श्रीराम लिखे बैनर, पोस्टर लिये लोगों के जय सियाराम के जयघोष से पूरा क्षेत्र राममय हो गया। हर आयु वर्ग के लोगों ने बाइक रैली का पुष्प वर्षा एवं जय श्रीराम के उद्घोष के साथ स्वागत किया। पश्चात हरिपुरकलाँ, सप्तसरोवर क्षेत्र होते हुए युगऋषि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा जी की पावन समाधि तक पहुंची और रैली सभा में परिवर्तित हो गयी। सभा को श्री श्याम बिहारी दुबे व श्री उदय किशोर मिश्र ने संबोधित किया। उन्होंने रामायण के विभिन्न चौपाइयों एवं दोहे से पूरे परिसर को श्रीराम के रंग में रंग दिया।

शांतिकुंज में हर्षोल्लास के साथ हुआ दीपोत्सव व संकीर्तन

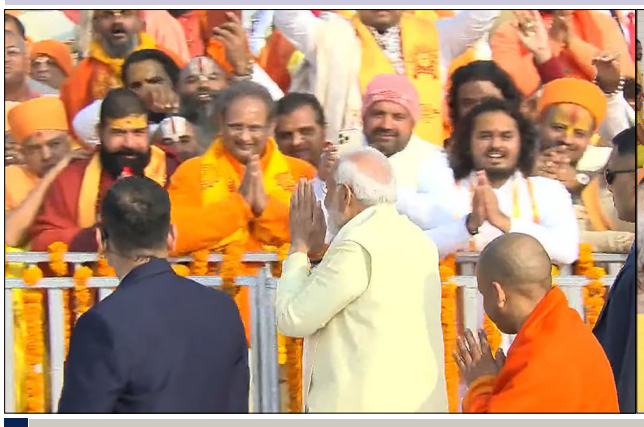

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह, अयोध्याधाम में प्रधानमंत्री का अभिवादन करते शांतिकुंज के युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं यज्ञ करते परिजन

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अयोध्या धाम में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह को अखिल विश्व गायत्री परिवार ने बड़े ही उत्साह के साथ मनाया। विगत कई दिनों से गायत्री तीर्थ में उत्साह सा माहौल है। चहुंओर जय श्रीराम के नारे गुंजायमान हो रहा है। शांतिकुंज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान से लेकर सम्पूर्ण विश्व के गायत्री परिवार के हजारों प्रज्ञा संस्थानों को भी आकर्षक रंगोलियों एवं पुष्पों से सजाया गया।

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के निमित्त सैकड़ों गायत्री साधकों ने गायत्री तीर्थ शान्तिकुंज में 27 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में विशेष आहुतियाँ दी। स्थान-स्थान पर मंगलगान से गुंजायमान हो रहा था। सायं सम्पूर्ण परिसर कई हजारों जगमगाते दीये और संकीर्तन ने उत्साह को चौगुना कर दिया।

अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा यानि युगांतरीय चेतना का प्रादूर्भाव।

आज सनातनियों, रामभक्तों आदि के संकल्पों का पूरा होने का दिन है। इस समय हर मन आह्लादित है कि हमारे प्रभु श्रीरामलला नव्य, दिव्य एवं भव्य मंदिर में विराजे हैं।

उल्लेखनीय है कि करोड़ों गायत्री परिजनों के प्रतिनिधि के रूप में गायत्री तीर्थ शांतिकुंज से युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह, अयोध्याधाम में उपस्थित रहे। देश के विशिष्ट गणमान्य अतिथि एवं श्रद्धावान भक्त भगवान रामलला के दर्शन के लिए अयोध्याधाम में उपस्थित रहे।

जय श्रीराम के जयघोष के साथ शांतिकुंज दल मुंबई रवाना

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

21 से 25 फरवरी, 2024 के बीच आयोजित होने वाले मुंबई अश्वमेध महायज्ञ के लिए शांतिकुंज से उच्च स्तरीय एक दल रवाना हुआ। दल अपने साथ यज्ञशाला, निर्माण, प्रदर्शनी आदि से संबंधित सामान लेकर वीडियो रथ सहित सात बड़ी गाड़ियों में रवाना हुआ। दल को अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर विदा किया। यह दल अपनी यात्रा के दौरान उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि राज्यों के क्षेत्रों में जनजागरण करते हुए जायेगा।

इस अवसर पर श्रद्धेय डॉ. पण्ड्या ने कहा कि 22 जनवरी को अयोध्या में प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है, इसके एक माह के बाद अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान

अश्वमेध महायज्ञ के लिए शांतिकुंज से दल रवाना करते डॉ. प्रणव पण्ड्या

में मायानगरी मुंबई में अश्वमेध महायज्ञ निर्धारित है। उन्होंने कहा कि इस धार्मिक अनुष्ठान से मायानगरी के निवासियों के विचारों में शुद्धता आयेगी। यहाँ से निकलने वाले प्रत्येक विचार सनातन संस्कृति, भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत होगी, जो युवा पीढ़ी को सकारात्मक दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने बताया कि देश-विदेश से तीन लाख से अधिक लोग इस महायज्ञ में भागीदारी के लिए पहुँच रहे हैं।

व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने बताया कि इस दौरान 1008 कुण्डीय महायज्ञ होगा। वैदिक पद्धति से निःशुल्क संस्कार सम्पन्न कराये जायेंगे। साथ ही विभिन्न रचनात्मक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। दल में श्री परमानंद द्विवेदी, श्री जमुना विश्वकर्मा, श्री कामता प्रसाद साहू के नेतृत्व में 36 सदस्य शामिल हैं।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व सामूहिक सूर्य अर्घ्यदान

● पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह को अखिल विश्व गायत्री परिवार देश भर में दीपोत्सव के रूप में मनायेगा। इस निमित्त अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या व श्रद्धेया शैलदीदी ने करोड़ों लोगों को पत्र लिखकर आवाहन किया है। उन्होंने अपने पत्र में कहा है कि 14 से 22 जनवरी तक देश-विदेश के हजारों प्रज्ञा संस्थानों, चेतना केन्द्रों और देवालयों में वृहत स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाएँ। साथ ही प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन प्रत्येक प्रज्ञा संस्थानों एवं देवालयों में राम भजन, संगीत आदि का सामूहिक रूप से आयोजन हो और सायंकाल अपने-अपने घरों व प्रज्ञा संस्थानों में दीपोत्सव मनाएँ। श्रीराम ज्योति प्रज्वलित करें। गायत्री परिवार प्रमुखद्वय ने कहा है कि अगणित राम भक्तों, श्रद्धालुओं और हिमालयवासी

शांतिकुंज के कार्यकर्त्ताओं एवं रामभक्तों द्वारा सामूहिक सूर्य अर्घ्यदान

ऋषियों, मुनियों, सिद्ध संतों, यतियों की मनोकांक्षा पूरी होने जा रही है, जो लगभग पाँच सौ वर्षों से रामलला की दिव्य, भव्य व नव्य मंदिर में विराजने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह सम्पूर्ण जगत के उत्कर्ष का एक ऐतिहासिक एवं निर्णायक अवसर होगा। इस अभियान का शुभारंभ रविवार को गायत्री तीर्थ शांतिकुंज से भव्य जन जागरण रैली के साथ किया गया। रैली जय श्रीराम के जयकारों के साथ आरंभ हुआ और रामधुन व राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने वाले नारों के साथ पाँच हजार से अधिक नर नारियों ने पंक्तिबद्ध हो इसमें भाग लिया। रैली के समापन अवसर पर सभी शांतिकुंज के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं, रामभक्तों एवं श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से सूर्य अर्घ्यदान किया और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मर्यादाओं को जीवन में उतारने का संकल्प लिया।

पटना में आयोजित हुआ विशाल यूथ इंपावरमेंट कार्यक्रम

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्वाधान में अश्वमेध यज्ञ के रजत जयंती के समापन अवसर पर 10 दिसंबर को विशाल यूथ इंपावरमेंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार के यूथ आइकॉन, युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं ख्याति प्राप्त शिक्षक श्री अवध ओझा जी ने दीप प्रज्जवल कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

युवाओं को संबोधित करते देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

बिहार राज्य के विभिन्न जिलों एवं झारखंड, नेपाल आदि आसपास के क्षेत्रों से पधारे 20000 से अधिक युवा आदरणीय चिन्मय पण्ड्या जी को सुनने आए।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने युवाओं का आवाहन करते हुए कहा कि भारत में जितनी भी क्रांति हुई उसमें युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा, ऐसे युवाओं का मैं आवाहन करता हूं। वर्तमान समय भारत की विरासत के पुनर्जागरण का है। आज का युवा भारत एवं पूरे विश्व का भविष्य है। युवक होने की परिभाषा उम्र से नहीं, उद्देश्य की उच्चता से है। स्वर्ग को खींचकर धरती पर लाने की शक्ति युवाओं में है। गायत्री परिवार का युवा पहले समाज को कुछ देने की कोशिश करता है। वह गंगा सफाई, दूसरे का नशा दूर करने में लगा है, पर्यावरण बचाने के लिए वृक्षारोपण करता नजर आता है। गायत्री परिवार के युवाओं के जांच का पैमाना अंतः करण की पवित्रता है। अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया जीजी की ओर से सभी युवाओं में सद्बुद्धि एवं ज्ञान की स्थापना के लिए देव स्थापना का चित्र प्रदान किए गए।

श्री अवध ओझा जी जो एक मशहूर शिक्षक हैं, वे भारत के युवाओं को जगाने का कार्य निरंतर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संगीत, साहित्य, सत्संग और सदगुरू यदि इन चारों से मित्रता कर लें, तो सफलता से कभी दूर नहीं होंगे। जब व्यक्ति खुद तप करता है तभी उसमें परिवर्तन होता है। संकल्प ले हम सब तपस्या करेंगे। आत्मिक ऊर्जा को आध्यात्मिक ऊर्जा में परिवर्तन करेंगे। धर्म से बड़ी कोई विज्ञान नहीं, गायत्री सूर्य का विज्ञान है। गायत्री परिवार मोटिवेशन लेने वाला नहीं पूरी दुनिया को मोटिवेशन देने वाला परिवार है।

नरेंद्र को विवेकानंद, सिद्धार्थ को बुद्ध बनाने का देश भारत है। गायत्री परिवार भारत का परिवार है- हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी इसमें शामिल हैं। उन्होंने युवाओं से अखंड ज्योति हर महीने पढ़ने को कहा जिससे जीवन का बहुआयामी विकास हो सके।

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री मनीष कुमार ने कहा की युवा प्रकोष्ठ से जुड़कर हजारों युवा आईएएस, आईपीएस, बैंकर, डॉक्टर, इंजीनियर बन राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं।

यहां के युवाओं ने गरीब बच्चों को पढ़ाने की योजना बनाई और आज सैकड़ों जगह बाल संस्कारशाला चल रहा है। उन्होंने युवाओं से आवाहन किया कि हम अच्छा बनेंगे और राष्ट्र को अच्छा बनाएंगे यह संकल्प लेकर जाएं। बिहार सोया हुआ शेर है जिस दिन बिहार जाग जाएगा उस दिन भारत जाग जाएगा।

ज्ञातव्य हो कि प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ पटना के युवा कार्यकर्ता विगत कई वर्षों से नशा उन्मूलन, दहेज प्रथा, पर्यावरण संरक्षण एवं अनेकों प्रकार की योजनाओं का सफल रूप से संचालन करते आ रहे हैं।

इससे पूर्व बाल संस्कारशाला के विद्यार्थियों ने स्वागत गान, मां गंगा का दर्द, बिहार की संस्कृति एवं योग का मनमोहन प्रदर्शन किया जिसे उपस्थित जनता ने तालियों के माध्यम से खूब सराहा।

अंत में सभी अतिथियों को गुरुदेव का साहित्य एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। मंच पर श्री ज्ञान प्रकाश जी व्यस्थापक युवा प्रबंधन, श्री श्याम बिहारी दूबे जी, मुख्य कार्यक्रम प्रभारी, शांतिकुंज, श्री योगेन्द्र गिरी पूर्वी जोन प्रभारी, शांतिकुंज श्री अरविंद जी, संयोजक, यज्ञ समिति, डॉ. नागेन्द्र जी उपस्थित रहे।

म.प्र. मुख्यमंत्री का शांतिकुंज आगमन

डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से भेंट करते मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं साथ में उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

म.प्र. के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी एवं उत्तराखण्ड पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक जी गायत्री तीर्थ शांतिकुंज पहुंचे। शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव व डॉ. निशंक जी का आत्मीय स्वागत किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव व डॉ. निशंक जी ने शांतिकुंज में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी से भेंट किया और विभिन्न रचनात्मक और सृजनात्मक विषयों पर मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद लिया।

इस अवसर पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेया शैलदीदी ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव जी एवं डॉ. निशंक जी का मंगल तिलक कर अभिनंदन किया और समाज के विभिन्न समस्याओं के समाधान परक युगसाहित्य एवं गायत्री महामंत्र लिखित उपवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर डॉ. पण्ड्या, श्रद्धेया शैलदीदी ने मुख्यमंत्री को आश्वस्त किया कि नारी सशक्तिकरण, युवा जागरण सहित समाज के नवसृजन में चलाये जाने वाले कार्यक्रमों में अखिल विश्व गायत्री परिवार का सतत् सहयोग मिलता रहेगा।

मुख्यमंत्री बनने के बाद पहली बार शांतिकुंज पहुंचे डॉ. मोहन जी एवं हरिद्वार सांसद डॉ. निशंक जी ने सन् 1926 से सतत् प्रज्वलित अखण्ड दीपक का दर्शन कर समाज की खुशहाली हेतु प्रार्थना की। साथ ही युगऋषिद्वय की पावन स्मारक सजल श्रद्धा प्रखर प्रज्ञा में अपनी भावांजलि अर्पित की।

सर्वे भवन्तु सुखिनः की सामूहिक प्रार्थना

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने सर्वे भवन्तु सुखिनः की सामूहिक प्रार्थना के साथ वर्ष 2024 की प्रथम किरण का स्वागत किया। इस अवसर पर आयोजित सामूहिक गायत्री आरती एवं ध्यान में देश विदेश से आये हजारों परिजनों ने प्रतिभाग किया। तो वहीं हजारों नर-नारियों ने आत्मिक प्रगति के लिए ध्यान साधना के साथ 27 कुण्डीय यज्ञशाला में विशेष आहुतियाँ डालकर अंग्रेजी कैलेण्डर नववर्ष का अभिनंदन किया।

इस अवसर पर अपने संदेश में गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने बीते वर्ष की समीक्षा करते हुए कहा कि वर्ष 2024 में नये संकल्प के साथ उत्साह से काम करें। इस वर्ष नारी सशक्तिकरण, युवा जागरण के अभियानों को और गति देना है। इस वर्ष अपने अधूरे सपनों को पूरा करने का लेखा जोखा के साथ जीवन को उच्चतर स्थान पर पहुंचाने की साधना करें। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 के पहले माह में रामलला मंदिर में विराजमान हो रहे हैं और यह वर्ष मानव मात्र के लिए भी कई उम्मीदें लेकर आया है, जिसे सदियों तक याद रखा जायेगा। संस्था की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलजीजी ने कहा कि यह वर्ष अच्छे विचारों को क्रियान्वित करने और अधूरे सपनों को पूरा करने हेतु दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने आया है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान एवं शांतिकुंज परिवार ने गायत्री परिवार प्रमुखद्वय से भेंटकर नववर्ष के लिए विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। साथ ही विभिन्न संस्कार बड़ी संख्या में सम्पन्न कराये गये।

गायत्री परिवार द्वारा गायत्री त्रिविध साधना में विश्व रिकार्ड

त्रिविध साधना में प्रतिभाग करते दिव्यांग विद्यार्थी

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखिल विश्व गायत्री परिवार अपने रचनात्मक एवं सुधारात्मक कार्यक्रमों के लिए संपूर्ण विश्व में एक अलग पहचान रखता है। इसी क्रम में एक और उपलब्धी गायत्री परिवार के साथ जुड़ गया। यह है अखिल विश्व गायत्री परिवार का गायत्री की त्रिविध साधना (गायत्री मंत्र लेखन, ब्रेल लिपि साइन लेग्वेंज और युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा जी की आवाज में गायत्री मंत्र साधना) में विश्व रिकार्ड इंडिया बनना। विश्व विकलांग सप्ताह के अंतर्गत चलाये गये अभियान में गुजरात प्रांत के 32 अलग-अलग स्कूलों में अध्ययनरत 3315 दिव्यांग बच्चों ने प्रातः 11:30 से 12 बजे के बीच एक समय में गायत्री की त्रिविध साधना किया है। सूरत, अहमदाबाद, भावनगर, नवसारी, बलसाड, सुरेन्द्रनगर, बड़ोदरा, मोडासा, अमरेली, गोधरा, पाटन आदि स्थानों में अध्ययनरत दिव्यांग बच्चों ने गायत्री मंत्र लेखन किया है। विश्व रिकार्ड इंडिया बनाने वाली संस्था के प्रतिनिधियों के बीच 3315 दिव्यांग बच्चों ने अपने हाथों तथा पैरों से गायत्री मंत्र का लेखन किया। सुरदास (दृष्टिबाधित) से लेकर अपाहिज बच्चों ने पूरी तन्मयता के साथ इस अभियान में भाग लिया। यह अभियान गायत्री तीर्थ शांतिकुंज के तत्त्वावधान में चलने वाली भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत चलाया गया।

इस उपलब्धि पर अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलजीजी ने इस अभियान में जुटे सभी कर्मठ परिजनों को अपनी शुभकामनाएँ दी है और कहा कि गायत्री के सिद्ध साधक व वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने गायत्री मंत्र को समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। गायत्री मंत्र बुद्धि को अच्छे मार्ग की ओर प्रेरित करना वाला महामंत्र है। सभी वेदों में गायत्री महामंत्र की महिमा का गान है।

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल ने भी अखिल विश्व गायत्री परिवार को इस उपलब्धि के लिए बधाई दिया। अपने संदेश में मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अभियान दिव्यांग बच्चों के लिए एक सुनहरा अवसर है। इस अभियान में गुजरात की हेमांगिनी बेन देसाई, प्रहरसा बेन मेहता, शांतिकुंज के कीर्तन दुष्यंत भाई देसाई आदि की सराहनीय भूमिका रही।

मैं शंख बजाते चलता हूँ, मेरे साथ चलिए : डॉ. पण्ड्या

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा दिये गये शंख बजाते हुए (गायत्री महामंत्र का विस्तार) चलता हूं, आप सब मेरे साथ चलिए। भारत सहित पूरी दुनिया में सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री मां गायत्री के सद्विचार और मंत्र को फैलाना है। सद्विचार आपके मानसिक स्तर को परिष्कृत करेगा और गायत्री महामंत्र की साधना आध्यात्मिक उर्जा से पोषित करेगी।

मुख्य सभागार में आयोजित सभा को संबोधित करते श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

युवाओं के प्रेरणा स्रोत श्रद्धेय डॉ. पण्ड्या शांतिकुंज के मुख्य सभागार में आयोजित सभा को संबोधित कर रहे थे। श्रद्धेय डॉ. पण्ड्या ने कहा कि गायत्री साधना न केवल साधक को ऊँचा उठने में मदद करती है, वरन् इस मंत्र के जप से साधक का तन मन दोनों सुदृढ़ होता है। मुझे इस महामंत्र के जप से अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं। आपको भी मिल सकते हैं। गीता व गायत्री विषयक कई पुस्तकों के लेखक श्रद्धेय डॉ. पण्ड्या ने कहा कि लगन व निष्ठा से किये जाने वाले प्रत्येक कार्य में सफलता अवश्य मिलती है। पूरी दुनिया का कोई भी व्यक्ति इस मंत्र की साधना कर सकता है। अपनी आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति से तपोनिष्ठ पूज्य आचार्य जी ने कहा है कि गायत्री मंत्र की साधना सभी के लिए है, कोई भी कर सकता है। यह सार्वभौम है।

इससे पूर्व शांतिकुंज के श्री ओंकार पाटीदार व श्री प्रेमलाल बिरला की युगगायकों की टीम ने गुरु की छाया में शरण जो पा गया और जीवन के देवता को आओ तनिक संवारे भक्ति संगीत से उपस्थित साधकों को सराबोर कर दिया। इस अवसर पर श्री शिवप्रसाद मिश्र, श्री संदीप कुमार सहित नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र, एक मासीय युगशिल्पी सत्र आदि में आये प्रशिक्षणार्थी, शांतिकुंज के अंतेवासी कार्यकर्ता भाई बहिन उपस्थित रहे। मंच संचालन श्री श्याम बिहारी दुबे ने किया।

नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में देसंविवि की छात्राओं ने किया प्रतिभाग

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

छात्राएँ कु. तनुजा रावत एवं वेदा देवी को शुभकामनाएँ देते डॉ. चिन्मय पण्ड्या

भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस परेड शिविर 2024 में उत्तराखण्ड से कुल चार विद्यार्थियों का चयन हुआ है। इनमें देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राएँ कु. तनुजा रावत एवं वेदा देवी का नाम शामिल है। ये छात्राएँ कर्तव्यपथ नई दिल्ली में मुख्य परेड में प्रतिभाग किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि अनुशासन एवं मन में सकारात्मक विचार होने से शरीर को नई ऊर्जा मिलती है। देसंविवि के छात्र-छात्राएँ निरंतर रचनात्मकता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। प्रतिकुलपति डॉ. पण्ड्या ने देवभूमि उत्तराखण्ड की ओर से परेड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु छात्राओं को शुभकामनाएँ दी।

विदित हो कि प्री.आर.डी.परेड शिविर 20 से 29 नबंवर में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया था। इस शिविर में छः राज्यों- उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार एवं झारखण्ड के 200 राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों ने प्रतिभागिता किया था। इन 200 में से 40 विद्यार्थियों का चयन निर्दिष्ट मापदण्डों जैसे वजन, लंबाई, दौड़, परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर मुख्य गणतंत्र दिवस परेड, नई दिल्ली के लिए किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. उमाकान्त इंदौलिया ने बताया कि पिछले लगभग 18 वर्षों से मुख्य गणतंत्र दिवस परेड, नई दिल्ली में प्रतिवर्ष देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का चयन होता आ रहा है। इस वर्ष तनुजा रावत एवं वेदा देवी के चयन ने इस गौरवमयी अध्याय को जारी रखा है। विवि परिवार ने कु. तनुजा रावत एवं वेदा देवी को बधाई दी एवं भविष्य में ऐसे ही रचनात्मक कार्य करते रहने की प्रेरणा दी।

गायत्री परिवार का हिस्सा बनने की थी प्रबल इच्छा - गडकरी

नैतिकता, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के माध्यम से भारत विश्वगुरु बन सकता है और देसंविवि भारत को विश्वगुरु बनाने में अपना योगदान कर रहा है।

देसंविवि. में वसुधैव कुटुंबकम पर आयोजित व्याख्यान माला में अपने विचार रखते केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी एवं अनाहत पत्रिका का अनावरण करते गणमान्य

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को देसंविवि में वसुधैव कुटुंबकम पर आयोजित व्याख्यान माला में प्रतिभाग किया। इस मौके पर केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि मेरी एक बार दोबारा गायत्री परिवार का हिस्सा बनने के लिए हरिद्वार आने की प्रबल इच्छा थी। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप सभी से यहां दोबारा जुड़ने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री धामी को राज्य में किए अपने अच्छे कार्य गिनाने की जरूरत नहीं है। उत्तराखंड के लोगों का उनके मुख्यमंत्री के प्रति यह स्नेह और विश्वास उनका कार्य कौशल साफ दिखता है।

उन्होंने बताया कि व्यक्ति का व्यवहार ही उन्हें ऊँचा बनाता है। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि हम अपनी आँखे दान कर सकते लेकिन दृष्टि नहीं कर पाएंगे और यह दृष्टि हमें हमारे गुरु और माता-पिता से मिलती है। प्रबोधन, शिक्षण, संस्कार से ही व्यक्ति का निर्माण होता है। उन्होंने भारतीय समाज में जीवन मूल्यों के महत्व को भी बताया। धर्म का अर्थ कर्तव्य के साथ जुड़ा हुआ है।

इस अवसर पर धामी ने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि उन्हें इस पावन धरा, परम वैभवशाली मंदिर में आने का मौका मिला है। हम सभी के लिए यह सौभाग्य का विषय है कि आज वसुधैव कुटुंबकम की थीम पर आयोजित इस विशेष व्याख्यानमाला में हम सभी को केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय एक प्रमुख शिक्षा संस्थान है जो विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्रदान करता है। यहां विश्व भर से छात्रों को अद्वितीय शिक्षा और विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इससे पूर्व केन्द्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री ने शौर्य दीवार पर देश के अमर वीर जवानों को पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद केन्द्रीय मंत्री गडकरी ने विश्वविद्यालय परिसर में मौलश्री के पौधे भी रोपित किए। विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या, हरिद्वार विधायक मदन कौशिक, विश्वविद्यालय के आचार्य और छात्र मौजूद थे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और बाल्टिक देशों के मजबूत होते शैक्षिक-सांस्कृतिक संबंध

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

यजुर्वेद के ऋषि ने भारत की सनातन देव संस्कृति के विषय में कहा- सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा, अर्थात् यह प्रथम संस्कृति है जो सर्वश्रेष्ठ है, विश्वव्यापी है, समूची विश्व मानवता की मागदर्शक है। युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने एक शताब्दी पूर्व संकल्पपूर्वक इसे पुनः विश्वव्यापी बनाकर मानवता को सर्वनाश से बचाने का प्रत्यक्ष-परोक्ष आध्यात्मिक अनुष्ठान आरंभ किया, जिसका प्रभाव आज पूरे विश्व में स्पष्ट दिखाई देता है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज की स्थापना इसी संकल्प को साकार करने के लक्ष्य के साथ हुई।

इस विश्वविद्यालय ने विगत 20 वर्षों में देव संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किया है। परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य संरक्षण में देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने 50 से अधिक देशों में 100 से अधिक अनुबंध स्थापित किये हैं। इनके माध्यम से पूरे विश्व में शैक्षिक-सांस्कृतिक आधार पर भारतीय सनातन संस्कृति का गौरव बढ़ा है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ही एशिया का पहला और विश्व का सबसे बड़ा बाल्टिक संस्कृति एवं अध्ययन केंद्र स्थापित है, जिसके माध्यम से इन देशों में भारतीय संस्कृति के प्रति निरंतर आस्था और आकर्षण बढ़ रहा है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ऊर्जावान प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के नेतृत्व में देव संस्कृति के वैश्विक विस्तार का कार्य निरंतर गतिशील हो रहा है। वे जनवरी 2024 के प्रथम पखवाड़े में बाल्टिक देश और लंदन के प्रवास पर गये। शैक्षिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक दृष्टि से यह प्रवास बहुत सफल एवं उपलब्धिपूर्ण था।

मुंबई अश्वमेध महायज्ञ

श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व शांतिकुंज में अखण्ड रामायण पाठ

22 जनवरी को मनायेंगे दीपोत्सव, जलायेंगे कई लाख दीये

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

परिजनों संग अखण्ड रामायण का पाठ करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं श्रीमति शेफाली पण्ड्या

अयोध्याधाम में होने जा रहे भगवान श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में 24 घंटे के लिए अखण्ड रामायण पाठ का शुभारंभ हुआ। मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदशरथ अजिर बिहारी चौपाई के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने शुभारंभ किया।

शांतिकुंज व देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार के सैकड़ों कार्यकर्ता भाई बहिनों ने गायत्री तीर्थ स्थित हनुमान मंदिर परिसर में अखण्ड रामायण का पाठ किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं शांतिकुंज का पूरा परिसर राममय दिखाई दिया। भोजनालय या कार्यालय चहुंओर रामायण की चौपाई गुंजती रही।

इस अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि पाँच सौ साल की त्याग व साधना के बाद दिव्य व भव्य मंदिर में श्रीरामलला विराजमान हो रहे हैं। यह प्रत्येक सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए गौरव का विषय है। हमारी सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति और अनेकानेक कारसेवकों की कठिन तपस्या का परिणाम है यह।

देश-विदेश के गायत्री परिवार के करोड़ों साधक 22 जनवरी को बड़े ही उत्साह के साथ श्रीराम दीपोत्सव मनायेंगे। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज एवं ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में कई लाख दीये जलायेंगे। उन्होंने कहा कि देश-विदेश के हजारों प्रज्ञा संस्थानों, गायत्री मंदिरों में भी अखण्ड रामायण पाठ एवं भजन संगीत के साथ उत्सव मनायेंगे। प्राण प्रतिष्ठा के एक माह बाद मायानगरी मुंबई में भी सनातन धर्म के प्रचार प्रसार, आध्यात्मिक वातावरण और राष्ट्र की उन्नति की कामना के साथ आश्वमेधिक महानुष्ठान प्रारंभ होगा।

कार्यक्रम विभाग प्रभारी श्री श्याम बिहारी दुबे व श्री उदयकिशोर मिश्र के संयोजन में अखण्ड रामायण पाठ का आयोजन हुआ।

कौशल ने पास की योग में जेआरएफ की परीक्षा

●प्रखर भदौरिया

गायत्री परिवार जीवन जीने की कला के, संस्कृति के, आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार, समाज, राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। गायत्री परिवार के अनेक उद्देश्य में से एक उद्देश्य शिक्षा की ओर भी है, जिसके लिए गायत्री परिवार बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहा है। शिक्षा उसे कहते हैं, जो भौतिक आवश्यकताओं में सहायता कर सकती है और विद्या उसे कहते हैं जो मनुष्य के कर्तव्यों के बारे में जिम्मेदारियों के बारे में, सदुणों के बारे में अपने कर्मों और स्वभाव को सही बनाने के बारे में आदमी को आगाह करती है। गायत्री परिवार से जुड़ा हुआ हर व्यक्ति अपने जीवन में सफलता को प्राप्त कर आगे बढ़ रहा है।

हाल ही में नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने यूजीसी नेट के परिणामों की घोषणा कर दी है। पिछोर तहसील के एक छोटे से गांव कछौआ के छात्र कौशल लोधी सुपुत्र जिहान सिंह लोधी ने चार बार नेट क्वालीफाई करने के पश्चात पांचवी बार में जेआरएफ क्वालिफाई किया है।

कौशल ने अपनी हायर सेकेण्डरी स्कूल परीक्षा 2017 में गायत्री शक्तिपीठ पर रहकर उत्तीर्ण कर अपने परिवार जनों का नाम रोशन कर दिखाया। परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत शक्तिपीठ के ट्रस्टियों ने उसे शांतिकुंज हरिद्वार जाने के लिए कहा, शांतिकुंज पहुंच कर कौशल ने नौ दिवसीय सत्र, युग शिल्पी सत्र किया। कौशल की सफलताओं को देख उसके परिजनों ने शांतिकुंज हरिद्वार में स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलाया, जहां उसके उज्ज्वल भविष्य को एक नई रोशनी प्राप्त हो सके।

कौशल ने अपनी ग्रेजुएशन योग विषय (2017-2020) तथा पोस्ट ग्रैजुएशन (2020-2022) में संपन्न की।

इसी दौरान कौशल ने नेट की परीक्षा देकर नेट परीक्षा क्वालीफाई किया। कौशल ने लगातार चार बार नेट क्वालीफाई करने के पश्चात दिसम्बर सत्र-2023 में जेआरएफ क्वालीफाई किया। वर्तमान में वह देव संस्कृति विश्वविद्यालय से पीएचडी कर रहे हैं। विश्वविद्यालय परिवार के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं शैल जीजी ने गीता एवं ध्यान की कक्षाओं के माध्यम से सदैव मार्गदर्शन किया।

कौशल - विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मेरे प्रेरणा स्रोत हैं जिन्होंने मुझे इस काबिल बनाया और मुझे सदैव हिम्मत दी आगे बढ़ने की, मेहनत करने की, मैं विश्वविद्यालय का ऋणी रहूंगा। पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माता जी का अनुग्रह मुझ पर बना रहे ऐसी प्रार्थना है।

अति विशिष्ट आध्यात्मिक अनुष्ठान- अश्वमेध महायज्ञ, मुम्बई

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई में उपरोक्त तिथियों में अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन होने जा रहा है। यह आध्यात्मिक अनुष्ठान विशेष है। नवयुग की गंगोत्री शान्तिकुञ्ज के तत्त्वावधान में आयोजित हो रहा यह महायज्ञ युग प्रवर्तक ऋषि परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के युग परिवर्तन के संकल्प से जुड़ा एक महान अनुष्ठान है, जिसका प्रभाव केवल मुम्बई या महाराष्ट्र पर ही नहीं, सारे विश्व पर पड़ेगा।

अश्वमेध यज्ञ जैसे आध्यात्मिक अनुष्ठान सामान्य समय में नहीं हुआ करते। दृश्य जगत में छाई अवांछनीयताओं को तो भौतिक संसाधनों से मिटाया और हटाया जा सकता है, लेकिन जब मानवीय मन को प्रभावित करने वाले सूक्ष्म जगत में विषाक्तता छा जाती है तो उसके शमन के लिए इस प्रकार के विशेष आध्यात्मिक प्रयोगों की आवश्यकता होती है। भगवान राम ने रावण सहित अपने युग के असंख्य दुर्दांत असुरों का वध कर दिया, लेकिन उनके विचारों के प्रभाव से सूक्ष्म जगत में छाई विषाक्तता को दूर करने के लिए दस अश्वमेध यज्ञों के आयोजन की आवश्यकता पड़ी थी। महाभारत युद्ध के बाद भगवान श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में पाण्डवों ने भी राजसूय यज्ञ किया था।

प्राचीन संदर्भ में अश्वमेध यज्ञ का प्रयोजन और विधान आर्षग्रंथों में देखा जा सकता है, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की युग निर्माण योजना के संदर्भ में इसका स्वरूप, इसकी उपयोगिता और उद्देश्य जानना हो, तो नवम्बर 1992 में प्रकाशित अखण्ड ज्योति के देव संस्कृति दिग्विजय विशेषांक का अध्ययन करना चाहिए।

यह देव संस्कृति दिग्विजय का अभियान है, आसुरी शक्तियों पर देव संस्कृति की विजय का अभियान है। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि पिछले युगों में असुरता का प्रत्यक्ष स्वरूप देखा जा सकता था, लेकिन आज उसने दुर्विचारों के रूप में हर व्यक्ति के मन-मस्तिष्क में प्रवेश कर लिया है। हर व्यक्ति के मन में देवासुर संग्राम चल रहा है, एक महाभारत लड़ा जा रहा है। समाज में हर जगह अनास्था, अश्लीलता, अक्रामकता, असहनशीलता, अराजकता, दुर्भावों का जो आक्रमण दिखाई देता है, वह असुरता का ही तो रूप है, जिसके परिणाम से सर्वत्र अभाव, असंतोष, अशांति, अविश्वास छाया हुआ है। लोगों में धार्मिक भावनाएँ भी कम नहीं हैं, लेकिन उन्हें इस तरह से ढालने की आवश्यकता है, जिससे वह अंतःकरण में निहित देवत्व को जगा सकें, आत्मविश्वास और ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ा सकें। व्यक्तित्व में देवत्व का अभिवर्धन उसे आदर्शोन्मुख, सदाचारी और परमार्थपरायण बनाता जाता है।

सशक्त-संगठित प्रयास करने होंगे यह युग परिवर्तन की वेला है। परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी तथा युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित करोड़ों साधकों के साथ अनेक ऋषितुल्य संतों व उनके अनुयायियों की तप-साधना के प्रभाव से वातावरण बदल रहा है। देश और दुनिया में देव संस्कृति का अभ्युदय और विस्तार होता दिखाई दे रहा है, लेकिन यह अभी अपर्याप्त है। सारी दुनिया में सूक्ष्म जगत में छाई विषाक्तता को दूर करने के लिए बड़े और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। अश्वमेध यज्ञ उसी प्रयोजन के लिए किया जा रहा है। जैसे-जैसे वातावरण की विषाक्तता दूर होगी, वैसे-वैसे मानवीय चिंतन और चरित्र में बदलाव आता चला जाएगा। दुनिया में छाये युद्धोन्माद, भौतिकवाद की होड़ को रोकने के लिए ऐसे ही आध्यात्मिक प्रयासों की नितांत आवश्यकता है।

आज सारे संसार में भौतिकता का साम्राज्य तेजी से बढ़ रहा है। यदि इस पर अध्यात्म का अंकुश न रहा तो इसके दुष्परिणाम भी उसी अनुपात में बढ़ते जाएँगे। आज व्यक्ति पद, पैसे, प्रतिष्ठा की चाह में सारी मर्यादाओं को लाँघकर कुछ भी करने के लिए तैयार है। ऐसे में परस्पर प्रेम, सद्भाव, सुख, शान्ति, सुरक्षा, आरोग्य का स्थान ही कहाँ रह जाता है? क्या हम ऐसी ही डरावनी दुनिया में रहना पसंद करेंगे? यदि नहीं तो हमें इन अवांछनीयताओं को निरस्त करने के सामूहिक प्रयास करने ही होंगे। वर्तमान युग में चल रहे देवासुर संग्राम में देवत्व का पक्ष लेना ही होगा।

अश्वमेध यज्ञ वर्तमान संदर्भ में मान्यता है कि अश्वमेध यज्ञ के आयोजक राजा द्वारा एक घोड़ा छोड़ा जाता था, जो अनेक राज्यों से होकर गुजरता था। यह घोड़ा जिस राज्य से गुजरता था, माना जाता था कि उस राज्य ने अश्वमेध यज्ञ के आयोजक राजा का आधिपत्य स्वीकार कर लिया है। जो उसे स्वीकार नहीं करता था, घोड़ा पकड़ लेता था, उसे आयोजक राजा की सेना से युद्ध करना होता था।

वर्तमान संदर्भ में अश्व पाश्विक शक्तियों का प्रतीक है। आज पुराने जमाने की तरह घोड़ा छोड़ने और आधिपत्य स्वीकार करने की सहमति देने जैसी बात तो व्यावहारिक नहीं है, लेकिन जो लोग देवत्व के पक्षधर हैं, उन्हें राष्ट्र जागरण के इस महान अभियान में सहयोग और भागीदारी करनी ही चाहिए। जिनके मन में किसी प्रकार की अनास्था या प्रतिरोध है, उन्हें इस यज्ञ और इसके पीछे निहित विचार क्रान्ति के विराट लक्ष्य एवं योजनाओं का अध्ययन करना चाहिए। देवत्व का पक्षधर होने में ही हर किसी की भलाई है। जो समय पर चूक जाएँगे, स्वयं को नहीं बदल पायेंगे, वे कर्मों की सहज गति के शिकार होकर हताशा, निराशा, रोग, शोक, क्लेश जैसी अवांछनीयताओं से ग्रसित रहकर संताप और असंतोष भरा पतनोन्मुख जीवन जीने को विवश रहेंगे।

नए वर्ष में लक्ष्य बोध और उदात्त संकल्पों के साथ बढ़ते रहें साहसी चरण

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

अखण्ड ज्योति की स्थापना और परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष 2026 की बढ़ती निकटता के साथ लक्ष्य प्राप्ति की उमंग और बढ़ती चुनौतियों के बीच हम नए वर्ष 2024 में प्रवेश कर रहे हैं। यह ठीक वैसा ही समय है जैसे भोर में अरुणोदय से पूर्व की सक्रियता का हुआ करता है। प्रतीक्षा होती है भगवान भाष्कर की, जिनकी किरणें तन-मन में दिव्य चेतना और असीम ऊर्जा का संचार कर देती है। जो अवसर को पहचानते हैं, समय का मोल समझते हैं वे अरुणोदय के पूर्व की ब्राह्मी वेला का उपयोग शौच, स्नान, जप, तप, व्यायाम आदि में कर दिनभर की सक्रियता के लिए भरपूर ऊर्जा का संचय कर लेते हैं।

यह युग प्रभात की वेला है। प्रज्ञावतार के संकल्प और सक्रियता के प्रभाव से समय नई करवट ले रहा है। देव संस्कृति का पुनरुत्थान हो रहा है। सदियों से सुप्त और दबी-कुचली आस्थाएँ अपने वैभवशाली इतिहास को दोहराने को उद्धत हैं। घोर अंधकार को चीरकर सतयुग की स्वर्णिम रश्मियाँ फूटने ही वाली हैं। ऐसी दिव्य वेला में जाग्रत् आत्माओं को सचेत होकर हर प्रकार के आलस्य, अविश्वास, अकर्मण्यता को त्यागकर पूरी शक्ति-सामर्थ्य के साथ नवसृजन के कार्यों में जुट जाना चाहिए। इसी में परम पूज्य गुरुदेव जैसी अवतारी चेतना के सान्निध्य की प्राप्ति का गौरव और उनके अंग- अवयव कहलाने की सार्थकता है।

वैसे तो हिन्दू नववर्ष का शुभारंभ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होता है, लेकिन वर्तमान समय में 1 जनवरी से आरंभ होने वाले अंग्रेजी नववर्ष से भी प्रत्येक व्यक्ति का संबंध होता ही है। इसके साथ हर व्यक्ति के कार्यक्रम, संकल्प और संभावनाएँ जुड़ी हुई हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से नवीनता के इस उत्सव में हमारी भागीदारी हो जाती है।

भौतिकवादी दुनिया में नववर्ष के स्वागत की अपनी ही परम्पराएँ है। प्रायः देखा जाता है कि उस परम्परा में वर्ष के अवसान का उत्सव अधिक दिखाई देता है। 31 दिसम्बर की संध्या को मौज-मस्ती और पार्टियों के आयोजन होते हैं। इनमें वहाँ की संस्कृति के अनुरूप नशे की मदहोशी देखी जाती है। वर्ष बदलने का उत्सव भी निविड़ अंधकार में ही मना लिया जाता है।

भारतीय परम्परा ऐसी नहीं है। हमारी परम्परा में हर उत्सव के साथ उत्कर्ष का विधान जुड़ा होता है। चैत्र नवरात्र में साधना से व्यक्तित्व के परिष्कार और आत्मशक्तियों के उपार्जन का क्रम जुड़ा है। श्रावणी में ब्राह्मणत्व के अभिवर्धन की प्रेरणा है, रक्षाबंधन परस्पर प्रेम के अभिवर्धन का पर्व है। हम दशहरा पर्व असुरता पर विजय के उत्साह के साथ मनाते हैं, तो दीपावली पर्व में धन के सदुपयोग की प्रेरणा है।

हम अंग्रेजी नववर्ष का स्वागत भी अपनी उदात्त परम्पराओं के अनुरूप करते रहे हैं। बीतते वर्ष की अंतिम संध्या में सामूहिक दीपयज्ञों के आयोजन किए जाते हैं। यह अवसर होता है बीतते वर्ष की सक्रियता की समीक्षा करने का और आगामी वर्ष में बेहतर सक्रियता के संकल्प लेने का। यह अवसर होता है हर व्यक्ति के अंदर आत्मोत्कर्ष की उमंग तथा लोकमंगल की भावनाएँ जगाने का।

हमारी परंपरा में नववर्ष का स्वागत मध्य रात्रि में नहीं होता, बल्कि उगते सूर्य को अर्घ्य देकर और प्रातः काल पूजन, प्रार्थना, यज्ञ करते हुए नए संकल्पों की सफलता के लिए देवशक्तियों से आशीर्वाद लिया जाता है। यह वेला आत्मचिंतन की वेला है। यह शुभ अवसर हममें नई चेतना, नई ऊर्जा, नए उत्साह, नए साहस, नए संकल्पों का संचार करने वाला हो, ऐसे प्रयास हम सबको करने चाहिए।

लक्ष्य और चुनौतियाँ

यदि अपने लक्ष्य का सही-सही बोध हो तो उसे पाने के संकल्प उभरते हैं और साहस भी होता है। परम पूज्य गुरुदेव का एक प्रसिद्ध सूत्र है- जो जैसा सोचता है, करता है, वह वैसा ही हो जाता है। अतः हम अपने सौभाग्य को समझें, अवसर को पहचानें और सामान्य मानवी की तरह जीवन में मरते खपते रहने की अपेक्षा अवतारी चेतना के (युग निर्माण) जैसे महान लक्ष्य के प्रति समर्पित होते चले जाएँ, इसी में जीवन की सार्थकता है।

यह परिवर्तन के महान क्षण हैं। प्रज्ञावतार की दिव्य चेतना के प्रभाव से भारत अपने सनातन सांस्कृतिक वैभव की ओर लौट रहा है। ऐसे में एक ओर नई संभावनाओं के लिए अनुकूल वातावरण बनता दिखाई दे रहा है, तो दूसरी ओर जाग्रत् आत्माओं के समक्ष चुनौतियाँ भी हैं। यह चुनौती है बढ़ते सनातन सांस्कृतिक वैभव और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप जनमानस को ढालने की।

लोगों को अच्छे मकान दिये जा सकते हैं, लेकिन सफाई से रहना तो उनके संस्कारों पर निर्भर है। अच्छा भोजन दिया जा सकता है, लेकिन नियम-अनुशासन में रहने की व्यक्ति की मानसिकता विकसित किए बिना स्वास्थ्य लाभ कैसे संभव हो पाएगा? अच्छी सड़कें बन जायें, लेकिन उन सड़कों पर फर्राटा भरने का उन्माद मन में छाया हो तो दुर्घटना का दंश झेलना ही पड़ेगा। आज बढ़ते वैभव के साथ व्यसन और फैशन की कुरीतियाँ तेजी से बढ़ती चली जा रही हैं। सभ्य समाज दहेज न लेने की समझदारी करने लगा हो, लेकिन विवाहोन्माद या जन्मदिन, विवाह दिन या अन्य उत्सवों में होने वाली करोड़ों, अरबों रुपये की बर्बादी ने उससे भी घातक रूप धारण कर रखा है। अन्न की बेतहाशा बरबादी हो रही है। धार्मिक कार्यक्रमों में दिखावा अधिक होने लगा है। ऐसी अनेक समस्याएँ सामाजिक प्रगति की बाधा हैं। ऐसी परिस्थितियों में परम्परा की तुलना में विवेक को महत्व देकर ही हम जीवन की सार्थकता तय कर सकते हैं।

अमृत पान है ऊषा पान

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

ऊषा अर्थात प्रातः काल उठने के बाद जल पीने को ऊषा पान कहते हैं, आयुर्वेद में ऊषा पान है। रोगों को दूर करने में यह सरल, निःशुल्क व सर्वसुलभ उपचार है। ऊषा पान को जल चिकित्सा या वाटर थेरेपी भी कहा गया। वर्तमान चिकित्सक भी आयुर्वेद के इस प्राचीन उपचार की महत्ता स्वीकार करते हैं।

ऊषा पान पर वैज्ञानिक शोध जापान की संस्था द सिकनेस एसोसिएशन ने अपने शोध अध्ययन में निम्न निष्कर्ष निकाला है।

रात में नींद के समय लगभग 6 घंटे तक हर व्यक्ति के शरीर में कम हलचल होती है। इस बीच पचाकर उसका रस सारे शरीर में पहुँचाने का काम बराबर चलता रहता है। इस प्रक्रिया के साथ शरीर में नये कोष बनाने तथा पुराने कोषों को मल के रूप में विसर्जित करने का चयापचय का काम चलता रहता है। रात में शरीर की पुरती के प्रवाह की कमी से जगह-जगह शरीर में विषैले तत्व एकत्रित हो जाते हैं। प्रातः जागते ही शरीर में पर्यापानमा है। एक साथ पानी पहुँचने से शरीर की आन्तरिक अंगों की धुलाई जैसी क्रिया होती है जिससे सहज ही शरीर में विज पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाते हैं। यदि

ये विजातीय पदार्थ या विष शरीर से बाहर नहीं निकल पाते तो अनेक रोगों के कारण बन जाते हैं। ये विषाक्त पदार्थ शरीर में पथरी या गांठ के रूप में बन जाते हैं। ऊषा पान से ऐसी बीमारियों को पनपने का अवसर ही नहीं मिलता।

ऊषापान के प्रयोग, परीक्षण एवं शोध से निम्न परिणाम निकले हैं-

●सिरदर्द, रक्तचाप, एनीमिया संधिवात, मोटापा, स्नायुरोग, साइटिका, दिल की धड़कन, बेहोशी।

●कफ, खांसी, दमा, ब्रोकाइटिस, टी.बी.।

●मैनेजाइटिस, लिवर संबंधी रोग, स्वप्नदोष ।

●हाइपरएसिडिटी, अम्लपित्त गैस संबंध रोग व तकलीफ।

●पेचिस, गुर्दे की बीमारी, कब्जियत, डायबिटीज ।

●नाक और गले संबंधी बीमारियां।

●स्त्रियों की अनियमित माहवारी प्रदर, गर्भाशय का कैंसर आदि समस्त रोगों की जड़ करून है।

●ऊषापान कन्स या अचूक उपचार है।

●परीक्षणों से रोग ठीक होने की अवधि निम्न प्रकार सिद्ध हुई है।

●रक्तचाप माह, मधुमेह माह, टी. बी. 3 माह, कब्ज गैस 10 दिन, कैंसर 6 माह।

गीता - कर्मयोगियों की कामधेनु

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

सुरक्षा संहग्रस्त होकर गांडीव संभाल न पा रहे अर्जन को महाभारत विजेता बनाने वाली गीत्ता। गीता जिसको आजादी के संग्राम में क्रांतिकारी अपने गले में बाँध हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गए। गीता जिसने दुबले-पतले गाँधी को इतनी शक्ति से भर दिया कि अंग्रेजी सत्ता उनके आंदोलन के सामने टिकने न पायी। निश्चित ही आज अग्नि-पथ पर चलकर अयुग गढ़ने का दायित्व निभाने जा रही युवा शक्ति हो फिर गीता के अमर तत्व की आवश्यकता है और उसे प्रदान करने का दायित्व संभाला है स्वयं हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने।

प्रत्येक सप्ताह विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों की एक विशिष्ट कक्षा में कुलाधिपति गीता के कुछ श्लोकों का मर्म समझाकर उन्हें व्यावहारिक जीवन में उतारने के सूत्र प्रदान करते हैं। साथ ही उनकी वाणी से विद्यार्थियों को कुलपिता और कर्मयोग की साकार मूर्ति आचार्य श्रीराम शर्मा के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को देखने के लिए नई दृष्टि मिलती है। जान पाते हैं कि कैसे इस युग की विपरीत रिस्थितियों में गीता को जीकर उनके गुरुदेव स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, विज्ञान-अध्यात्म समन्वयकर्ता इत्यादि दायित्वों को निभाते हुए विश्व-भूमि की अनुपम सेवा कर सके।

कुलाधिपति द्वारा वर्णित गीता माहात्म्य के कुछ अमृत बिन्दु निम्नवत है-

●भगवद्गीता का मानवमात्र को संदेश है- अमृतपुत्रों! जागो, अपने आप को पहचानें और खुद को योग में प्रतिष्ठित करो। अपने संशयों का निवारण करो एवं श्रद्धा रूप अग्नि को प्रज्जवलित करो।

●जैसे बुद्ध ने वैसे परशुराम नहीं, जैसे राम थे वैसे कृष्ण नहीं। अवतार परंपराओं से नहीं बँधे होते। वे शाश्वत सत्य के प्रतिपादन के लिए अपने विवेक से युग की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं।

●गीता के लिए जितने कृष्ण अनिवार्य थे, उत्तने ही अर्जुन। अर्जुन यदि पूर्ण निश्छल होकर प्रश्न न कर रहे होते, तो शायद गीता का ज्ञान मनुष्य मात्र को प्राप्त न हो पाता। गीता बताती है कि ज्ञान देने के लिए ईश्वर को भी गुरु रूप में अवतरित होना पड़ता है। दूसरी तरफ अर्जुन को ज्ञान प्राप्ति की शुरूआत उसी क्षण से होती है जब वह, शिष्यस्तेऽहं कहकर अपने अहं के विसर्जन की शुरूआत कर देता है।

●गीता कहती है, श्रद्धावान को ही परम शांति प्रदान करने वाले ज्ञान की प्राप्ति होती है, मानवता इसी के लिए प्यासी है।

●यूँ तो गीता के प्रथम छह अध्यायों में कर्मयोग, द्वितीय छह में भक्ति योग एवं अंतिम छह में ज्ञान योग का वर्णन है परंतु अंततोगत्वा गीता कर्मयोग को ज्ञान एवं भक्ति की नींव पर खड़ा करती है।

●गीता का संदेश है कि जीवन को यज्ञमय कर दें। अर्थात् (इदं न मम) के भाव से अपने आपको समाज के हित में विलीन करने के साथ ही मनुष्य ईश्वरत्व प्राप्ति के मार्ग पर प्रगति कर सकता है।

●कर्मण्येवाधिकारस्ते के संदेश से गीता मनुष्य को जीवन जीने की शैली समझाती है। गीता का मर्म यही है कि कर्म विषयक सारे अहं समाप्त किये बिना ईश्वर जीवन रथ का सारथी बन विजय नहीं दिलाता है।

हँसिए - हँसाइए - निरोग रहिए

●पत्रकारिता विभाग, देसंविवि.

जीवन की भाग दौड़ में हताश निराश एवं थका मानव इतना भ्रमित एवं परेशान पहले कभी नहीं दिखा। अपनी उलझनों के चक्रव्यूह में फंसकर स्वास्थ्य, निरोगिता एवं यौवन उत्तर है उसके लिए सपने की चीजें बन गयी हैं। अब हर उलझनों के लिए टॉनिकों और औषधियों की दुनिया में भटका करता है। इसकी यह भटकन बहुत कुछ कस्तूरी मृग की तरह है, जो उसे हास्यरूपी अमूल्य निधि एवं अचूक टॉनिक सुझायी ही नहीं देता, मात्रा में उपलब्ध करा रखा है। जिसे ईश्वर ने उसको सहज ही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करा रखा है।

हास्य को सदा से ही शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का साधन माना गया है। विद्वान हजरत सुलेमान ने इसे रामबाण औषधि की संज्ञा दी है। उनके शब्दों में- यदि मुख पर हास्य और हृदय में उल्लास है, तो स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव रामबाण औषधि की तरह पड़ता है। इसी बात की पुष्टि में डॉ. ओलिवर बैंडल होम्ज कहते हैं कि हास्य या उल्हनाम। प्राकृतिक औषधियों का महासागर है।

1. स्विटजरलैंड में आयोजित इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ ह्यूमर में उपस्थित तथ्यों के अनुसार पचास के दशक में आम इन्सान 18 मिनट प्रतिदिन हँसता था। जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार के बावजूद 90 के दशक में यह समय सिमटकर मात्र 6 मिनट शेष रह गया है। जबकि पचास का दशक भीषण आर्थिक मंदी के लिए माना जाता है।

2. लाफिंग थेरेपी के आविष्कार का श्रेय एक अमेरिकन पत्रकार नारमन काजिन को जाता है। हँसने से सुधार होता है। यह विचार उन्होंने अपनी पुस्तक अनाटमी ऑफ इलनेस में प्रतिपादित किया है। उनकी स्वयं की रीढ़ की हड्डी में ऐसी बीमारी थी, जिसका उपचार विज्ञान जगत के पास नहीं था। उन्हें असहनीय पीड़ा होती थी, जिससे ध्यान बँटाने के लिए टी.बी. पर हास्य कार्यक्रम देखते और ठहाके लगाते। कुछ दिनों में वह यह देखकर चकित थे कि दर्द पूर्णतया गायब हो गया है। इस प्रकार उन्होंने चिकित्सा जगत को अपने आविष्कार का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि जोर - जोर से हँसने पर शरीर में एडोर्फिन नामक रसायन का स्तर बढ़ जाता है, जो अच्छे दर्द निवारकों में है। यही नहीं इससे मस्तिष्क में पर्याप्त मात्रा में रक्त संचार होता है, जिससे न्यूरोट्रांसमीटर की मात्रा बढ़ती है। यही नहीं मधुमेह. रक्तचाप, दमा व चर्मरोग आदि बीमारियाँ दूर हो जाती है।

3. जर्मन मनोचिकित्सक डॉ. माइकल टिटन के अनुसार आज हम ऐसे समाज में रह रहे हैं जो उपलब्धि व सफलता को अधिक महत्व देता है और जब इन स्तरों को हासिल करने में असफल हो जाता है व स्वयं की कल्पना के इस मापदंडों पर खरा नहीं उतरता, तो वह शर्म, हताश व अवसाद का शिकार हो जाता है। लोगों को हँसने का कोई कारण समझ नहीं आता, यहाँ तक कि कठिन समय में वह स्वयं पर भी हँस नहीं पाता।

4. जोरों से हँसने पर वक्षस्थल पर एक के बाद एक झटके लगते हैं। प्रत्येक झटके के साथ रक्तवाहिनी नलिकाओं का रक्त हृदय तक पहुँचने के पहले मार्ग में कई जगह रूकता है। यही कारण है कि देर तक हँसते रहने से मनुष्य का चेहरा! थोड़ा-बहुत लाल हो जाता है। हास्य प्रक्रिया के बीच - बीच जो श्वासोच्छवास प्रक्रिया होती है, उसके कारण फेफड़ों के बाहर साफ हवा पहुँचती है और दूषित वायु बाहर निकलती है।

शैलबाला पण्ड्या मैनेजिंग ट्रस्टी, वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, (टी.एम.डी.) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शांतिकुंज, हरिद्वार, 249411 (उत्तराखंड) द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी आफसेट प्रिंटर्स, गुप्ता कांप्लेक्स, रेलवे रोड, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक : डॉ. प्रणव पण्ड्या । पताः शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)। पिन-249411। टेली फैक्स :- 01334-260723 Email: journalism.masscom@dsvv.ac.in, Website: www.dsvv.ac.in